ISSN 2319-8419

Published by

ज्ञान महाविद्यालय
महो अर्णः सरस्वती प्र चेतयति केतुना।
धियो विश्वा विराजति॥
रघु परिसर
अलीगढ़

Annual and Bi-Lingual International Journal

Vol. 8 ISSUE- 11

GYAN BHAV

Peer Reviewed Journal of Teacher Education

FEBRUARY- 2019

IN COLLABORATION WITH UP SELF FINANCE COLLEGES' ASSOCIATION

GYAN BHAV Journal of Teacher Education

EDITOR IN CHIEF

Dr. (Mrs.) Abha Krishna Johri

Head, B.Ed. Department
Gyan Mahavidyalaya, Agra Road,
Aligarh (U.P.)-202002
Mob. No.- 9456606428

ADVISORY COMMITTEE

Dr. Vedram Vedarthi
Ex. Dean, Faculty of Education
Agra University, Agra (U.P.)

Prof. Gunjan Dubey
Teacher Education Department
A.M.U., Aligarh
Mob. No.- 9412459713

Prof. Harcharan Lal Sharma
Curriculum Specialist (Moscow)
(Ex-NCERT, NIOS – GOI)
Consultant & Co-ordinator,
School Education Think Tank,
Surya Foundation, New Delhi

Dr. Jai Prakash Singh
D.Lit.
Head, Deptt. of Teacher Education
D.S. (PG) College, Aligarh (U.P.)
Mob. No.- 9410210482

Dr. Rajeev Kumar
Ex. Dean, Faculty of Education
Dr. B.R.Ambedkar University
Agra (U.P.)
Mob. No. 9410427456

Dr. Punita Govil
Associate Prof.
Department of Education
A.M.U., Aligarh
Mob. No.- 9837146021

EDITORIAL BOARD

Ms. Bhawna Saraswat
Mob.No. 8923814400, 8410873600

Shri Lakhami Chandra
Mob.No. 9457425770

Smt. Vardha Sharma
Mob.No. 8218377489

Dr. Ratna Prakash
Mob.No. 7247875053

SECRETARIAL ASSISTANCE

Mr. Jay Prakash Sharma

Gyan Bhav : Journal of Teacher Education is an Annual and bi-lingual periodical published every year in February by Gyan Mahavidyalaya, Aligarh. Department of Teacher Education of Gyan Mahavidyalaya is accredited **'A' Grade with CGPA 3.16 by National Assessment and Accreditation Council (NAAC) on 5th July, 2012.**

The Journal aims to provide teachers, teacher-educator, educationist, administrator and researchers a forum to present their work to community through original and critical thinking in education.

Manuscripts sent in for publication should be inclusive to Gyan Bhav Journal of Teacher Education. These, along with the abstract, should be in duplicate, typed double-spaced and one side of the sheet only, addressed to the Editor in Chief , Gyan Bhav Journal of Teacher Education, Dept. of Teacher Education, Gyan Mahavidyalaya, Agra Road, Aligarh – 202002

Computer soft copy can be sent by **E-mail : publicationgyan@gmail.com**

Copyright of the articles/research papers published in the journal will rest with Gyan Mahavidyalaya and no matter may be reproduced in any form without the prior permission of Gyan Mahavidyalaya. The content of matter are the views of the author only.

Correspondence related to publication, permission and any other matter should be addressed to the Editor-In-Chief.

CONTENTS

S. No.	TITLE		Page No.
1.	शिक्षा के क्षेत्र में भारतीय संगीत की महत्ता एवं वर्तमान में प्रासंगिकता	■ डॉ. मुक्ता वार्ष्णेय	1-4
2.	उच्च शिक्षा के प्राध्यापक एवं प्राध्यापिकाओं के समायोजन स्तर का तुलनात्मक अध्ययन	■ डॉ. बीना कुमारी ■ डॉ. पुष्पेन्द्र कुमार सारस्वत	5-9
3.	A Study of the Effect of School Environment on Educational Aspiration of the Students at Secondary Level	■ Ms. Bhawna Saraswat ■ Dr. Pooja Gupta	10-20
4.	अनुदानित तथा स्ववित्त पोषित संस्थानों के बी.एड. के छात्रों के पर्यावरणीय ज्ञान एवं अभिवृत्ति का अध्ययन	■ मनोज कुमार शर्मा ■ डॉ. राकेश कुमार शर्मा ■ डॉ. अंशु शर्मा	21-28
5.	A Differential Managerial Styles of Principals: A Study "	■ Dr. Poonam Mishra ■ Sanjeev Kumar	29-35
6.	SUBSCRIPTION FORM		

GYAN BHAV : JOURNAL OF TEACHER EDUCATION **ISSN 2319-8419**
VOL. - 08 FEBRUARY, 2019

शिक्षा के क्षेत्र में भारतीय संगीत की महत्ता एवं वर्तमान में प्रासंगिकता

* डॉ. मुक्ता वार्ष्णेय

संगीत का प्रादुर्भाव अनादि काल में हुआ। सभ्यता के विकास के साथ निरन्तर इसका भी विकास हुआ। विभिन्न प्रकार की भाषा, बोली तथा संस्कृतियों के व्यक्तियों ने अपने–अपने स्तर से संगीत का विकास किया। विभिन्न क्षेत्रीय त्योहार, उत्सव तथा रीति–रिवाजों के अवसर पर गाये जाने वाले गीतों में इसकी झलक मिलती है। संगीत का महत्व इसी से उजागर होता है कि हमारे देश के सर्वोच्च सम्मान भारत रत्न से भी अनेक संगीतज्ञों को नवाजा गया है, साथ ही विदेशों में भी संगीतज्ञों ने कीर्तिमान स्थापित कर सम्मान प्राप्त किये हैं। विभिन्न प्रकार का संगीत अनेक प्रकार की गंभीर बीमारियों से बचाव एवं उनके उपचार में भी सहायक सिद्ध होता है।

प्रस्तावना

शिक्षा और संगीत मानव जीवन के अभिन्न अंग हैं। प्रकृति की गोद में पले मानव के प्रयत्नों द्वारा पनपता हुआ संगीत सदा मन को आनन्दित करता रहा है। हृदय के तारों को झंकृत कर देने वाली संगीत की आनन्ददायिनी शक्ति सृष्टि के प्रारम्भ से ही उद्भूत हुयी। मानव अपने मन के उद्गारों को संगीत द्वारा व्यक्त करता है। प्रायः बाल्यावस्था में बालक की प्रारंभिक शिक्षा (हिन्दी व अंग्रेजी वर्णमाला) संगीत में पिरो देने से वे सरलता से याद करने में सक्षम होते हैं। इसी प्रकार दोहों और चौपाइयों को स्वर लहरी के माध्यम से कंठस्थ करना सुगम हो जाता है। प्रातःकाल भक्तिपूर्ण संगीत द्वारा सकारात्मक ऊर्जा का संचार तथा अधिक लम्बे समय तक कार्यशैली के तनाव को कम करने में भी संगीत सहायक सिद्ध होता है। अतः मानव के जीवन में शिक्षा और संगीत ऐसी कड़ियाँ हैं, जो मन–मस्तिष्क को आनन्दानुभूति के साथ–साथ एकाग्रता, आध्यात्मिकता एवं व्यक्तित्त्व का सर्वांगीण विकास करने में सहायक होती हैं।

अध्ययन की उपयुक्तता

प्रस्तुत अध्ययन की उपयुक्तता का प्रमुख कारण शिक्षा के क्षेत्र में भारतीय संगीत को उजागर करना तथा शिक्षित वर्ग को संगीत के विभिन्न सोपानों से अवगत कराना है, जिससे वे संगीत को केवल मनोरंजन व आमोद–प्रमोद का साधन न मानकर उसकी महत्ता से रू–ब–रू हो सकें, साथ ही बदलते परिवेश में शिक्षा और संगीत के पारस्परिक सम्बन्ध को अन्य पाठ्य विषयों की भाँति स्वीकार कर सकें। भारतीय संस्कारों की प्रेरणा से ओतप्रोत प्रकृति से जन्मे लोक संगीत द्वारा संस्कृति की विरासत को बचाये रखें साथ ही मन को एकाग्र एवं तनावमुक्त करने वाले शास्त्रीय संगीत (रागों के श्रवण एवं गायन) द्वारा मनुष्य के मन–मस्तिष्क पर पड़ने वाले सकारात्मक प्रभाव को जानने एवं समझने की महती आवश्यकता है।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन निम्न उद्देश्यों की पूर्ति हेतु चयनित किया गया है–

1–ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर शिक्षा के क्षेत्र में संगीत को उजागर करना ।

2–बदलते परिवेश में सांगीतिक शिक्षा के विभिन्न परिवर्तनों को मुखरित करना ।

* एम0ए0, बी0एड0, नेट, पी–एच.डी. (संगीत) सहायक प्रोफेसर, शिक्षक शिक्षा संकाय, ज्ञान महाविद्यालय, अलीगढ़ मो0 नं0–09410210345

अध्ययन का क्षेत्र

यह अध्ययन ऐतिहासिक तथ्यों पर आधारित है, साथ ही वर्तमान समय में इसकी प्रासंगिकता पर बल दिया गया है।

व्याख्या

भारतीय संगीत अनादि है। इसके सम्बन्ध में धार्मिक एवं प्राकृतिक मान्यताओं के साथ–साथ मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण भी निहित है। धार्मिक मान्यता के आधार पर भारतीय संगीत का उद्भव सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा जी द्वारा हुआ। एक किंवदन्ति है, कि इन्द्र देव ने ब्रह्मा जी से प्रार्थना की, कि ऐसा कोई नाट्य बनाइए, जो कि दृष्टव्य और श्रव्य हो अर्थात् जिसे सुना व देखा जा सके ? तब ब्रह्मा जी ने नाट्य वेद की रचना की और भरत मुनि को इसका ज्ञान दिया। इस प्रकार शिक्षा के क्षेत्र में संगीत का उद्भव 'नाट्य शास्त्र' से माना जाता है। जब देवलोक से संगीत पृथ्वी लोक पर आया, तब मनुष्य के साथ ही संगीत का जन्म पृथ्वी पर हुआ। जिस समय आदि मानव को वस्त्रों का ज्ञान न था, भाषा का ज्ञान न था, तब भी वह मन के उद्गारों को प्रकट करने के लिए अस्पष्ट शब्दों (हा, हू, हा) का उच्चारण एवं हाथ–पैरों के संचालन द्वारा मन के उल्लास को व्यक्त करता था। अतः संगीतज्ञों के अनुसार भू लोक पर शिक्षा रूपी वृक्ष से पूर्व ही संगीत अपनी प्राकृतिक छटा विखेर चुका था।

पाश्चात्य विद्वान जैम्स लॉग के अनुसार ''जिस प्रकार मनुष्य का बोलना, चलना, रोना–हँसना क्रियाएँ होती हैं, ठीक उसी प्रकार संगीत भी स्वयं उद्भूत हुआ।''[1]

फ्रायड के शब्दों में ''संगीत की उत्पत्ति एक शिशु के समान मनोविज्ञान के आधार पर हुई, जिस प्रकार रोना, चिल्लाना, हँसना आदि सहज और स्वतः क्रियाएँ हैं, उसी प्रकार संगीत मनुष्य की जन्मजात क्रिया है।''[2]

भारतीय संगीत का उद्गम वेदों में परिलक्षित होता है। जिसमें विश्व का आदि साहित्य (ज्ञान भण्डार) है। प्राचीन आचार्यों के अनुसार वेद साहित्य की इकाई हैं, जिसके अन्तर्गत मन्त्र भेद के कारण ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद का पृथक रूप से निर्माण हुआ। सर्वप्रथम ऋग्वेद में ऋचाएँ व मंत्र पद्य रूप में पढ़े जाते थे। इन मंत्रोच्चारणों से अनुभव किया गया कि उतार–चढ़ाव की अवस्थाओं में मंत्र पढ़ना एवं सुनना कर्णप्रियता का द्योतक है और इसे ही आधार मानकर सर्वप्रथम उदात्त, अनुदात्त और स्वरित तीन स्वर स्थापित हुये। स्वरित स्वर को आधार मानकर ऊँ अक्षर का उच्चारण किया जाने लगा। स्वरित स्वर से ऊँचे स्वर को उदात्त तथा नीचे स्वर को अनुदात्त रूप में सम्बोधित किया गया। शनैः–शनैः लगभग सभी वैदिक मंत्रों का उच्चारण तीन स्वरों में होने लगा, तत्पश्चात् सामवेद में सात स्वरों की स्थापना हुयी।

उपनिषद् भारतीय चिन्तन धारा का एक प्रमुख स्त्रोत है। भारतीय तत्व ज्ञान व धर्म सिद्वान्तों की सरिता उपनिषदों से ही प्रवाहित होती है। छांदोग्य उपनिषद् में गीत, वाद्य एवं नृत्य तीनों का उल्लेख है, यज्ञकाल में श्लोकों का पाठ छन्दों और स्वरों में किया जाता था।''[3]

शिक्षा ग्रन्थों को वेदों का अंग माना गया है। इसमें वैदिक संगीत, भाषा–व्याकरण इत्यादि का उल्लेख मिलता है। शिक्षा ग्रन्थों में पाणिनी शिक्षा, याज्ञवल्क्य शिक्षा और नारदीय शिक्षा ग्रन्थों का अधिक उल्लेख मिलता है। 'पाणिनी कृत ''अष्टाध्यायी'' मूल रूप से संस्कृत व्याकरण का ग्रन्थ है, फिर भी इसमें तत्कालीन संगीत के तीनों अंगों गायन, वादन व नृत्य का उल्लेख है। पाणिनी ने संगीत के लिए ' शिल्प' संज्ञा का प्रयोग किया।'[4] कंठ संगीत गाने वालों के लिए 'गायक' तथा स्त्री गायिका के लिए 'गायनी' संज्ञा दी।

नृत्यकर्ता के लिए नर्तक तथा संगतकर्ता को 'परिवादन' कहकर संबोधित किया। 'नारदीय शिक्षा' नारद ऋषि द्वारा रचित ग्रंथ है। इसमें 'साम के सस्वर' पाठ और गान की विधि के साथ–साथ गांधर्व गान की भी व्याख्या की गयी है साथ ही श्रुति, स्वर, ग्राम, मूर्च्छना, जाति इत्यादि सांगीतिक शिक्षा पर बल दिया गया है।

पुराण भारतीय संस्कृति के प्राचीन ग्रंथ हैं, जिसमें समयानुसार साहित्य, संगीत आदि से सम्बन्धित विचारों एवं सिद्धान्तों का संकलन किया गया है। पुराणों की संख्या 18 मानी गयी है ''जिसमें वायु पुराण, पद्म पुराण,

मार्कण्डेय पुराण, स्कंद पुराण तथा लिंग पुराण'' में विशेष रूप से संगीत विषयक जानकारी प्राप्त होती है।''[5] वायु पुराण में गुरु–लघु अक्षरों और विभिन्न तालों के आधार पर गीत रचना का उल्लेख है। इसी प्रकार विष्णु पुराण में साम गान की महिमा व गंधर्व संगीत का प्रचुर उल्लेख मिलता है।''[6]

भारतीय सभ्यता, सांस्कृतिक एवं सामाजिक व्यवस्था की दृष्टि से रामायण और महाभारत महाकाव्यों का महत्वपूर्ण स्थान है। इस महाकाव्य में विदित होता है कि उस समय समाज अपने व्यवस्थित रूप में था, इसलिए कला और साहित्य का विकास भी होता रहा। गीत, वाद्य तथा नृत्य में लोगों की रुचि थी। 'संगीत शब्द के लिए 'गान्धर्व' शब्द का प्रयोग किया जाता था।''[7] रावण स्वयं संगीत का ज्ञाता था। उसने स्वरों के माध्यम से मंत्रोच्चारण करके भगवान शंकर को साक्षात् प्रकट किया। रावण के राज्य में युवतियाँ भिन्न–भिन्न प्रकार की वीणा बजाने में प्रवीण थीं। इस समय शंख, भेरी, दुन्दुभी आदि का प्रयोग युद्ध प्रस्थान के समय किया जाता था। महाभारत काल में भी सभ्य समाज में तीनों कलाओं को आदर की दृष्टि से देखा जाता था। अर्जुन ने चित्रसेन से गायन, वादन एवं नृत्य की शिक्षा ग्रहण करके राजा विराट की कन्या उत्तरा को '' बृहन्नला'' के रूप में संगीत की शिक्षा प्रदान की।

महाभारत काल के पश्चात् जीवन की सत्यता, पावनता, सुन्दरता, अहिंसा तथा अस्तेय जैसे जीवन के मूल्यों पर चलने की राह दिखाने वाले महावीर स्वामी व गौतम बुद्ध के नाम सुविख्यात हुये। आपका विश्वास था, कि इन मूल मंत्रों पर चलने वाला व्यक्ति ही कला, साहित्य तथा संगीत की सेवा कर सकता है। न केवल आपने सामाजिक, सांसारिक, आध्यात्मिक पक्ष की ओर जनता का ध्यान आकृष्ट किया, अपितु संगीत और साहित्य को भी उच्च पराकाष्ठा तक पहुँचाया। ''बौद्ध साहित्य में उल्लेख है कि नालन्दा, विक्रमशिला, औदन्तपुरी भारत के इन तीन गौरवपूर्ण विश्वविद्यालयों में संगीत विभाग ' गान्धर्व विद्या विभाग' के नाम पर था एवं लय वाद्यों की नियमित शिक्षा दी जाती थी।''[8]

इस प्रकार शिक्षा के क्षेत्र में भारतीय संगीत की जड़ें फैल चुकी थीं। विशेष रूप से मुगल काल में अकबर के शासन काल का समय संगीत का स्वर्ण युग माना गया। ''दरवार के नौ रत्नों में अकवर ने तानसेन को 'कंठाभरण वाणी विलास' की उपाधि से विभूषित किया।''[9] भारत में अंग्रेजों के आगमन से सांगीतिक शिक्षा गुरु–शिष्य (घराना) परम्परा के सीमित दायरे में बँध गयी। क्योंकि अंग्रेज संगीतज्ञों को हीन भावना से देखते थे, ऐसी स्थिति में संगीतज्ञों ने सुरक्षित स्थानों पर अपने पुत्रों एवं चुनिंदा शिष्यों की विधिवत साधना से संगीत को सुरक्षित रखा।

वर्तमान में भारतीय संगीत की प्रासंगिकता

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् शिक्षा के क्षेत्र में संगीत को पुर्नस्थापित करने का श्रेय पं0 विष्णु नारायण भातखंडे व पं0 विष्णु दिगम्बर पलुस्कर को दिया जाता है। आपने शिक्षा जगत में न केवल संगीत को पाठ्य विषय के रूप में मान्यता दिलवाई अपितु मैरिस म्यूज़िक कॉलेज (लखनऊ), माधव संगीत महाविद्यालय (ग्वालियर), म्यूज़िक कॉलेज (बड़ौदा) आदि कॉलेजों की स्थापना की। माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड इलाहाबाद द्वारा हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट पाठ्य विषयों में संगीत गायन, वादन (सितार–तवला) को विषय रूप में मान्यता प्राप्त हुयी, जो कि लगभग चार दशक पश्चात् छात्राओं की संख्या कम होने से समाप्त करने हेतु विचारणीय है। स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर विश्वविद्यालयों द्वारा संगीत को वरीयता दी जा रही है साथ ही वर्तमान समय में एम0फिल0 व पी–एच.डी. की ससम्मान उपाधि प्रदान की जाती है। यही नहीं, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा में संगीत विषय को अन्य विषयों के समतुल्य स्थान दिया गया है।

विश्वविद्यालय स्तर पर नवीन पाठ्यक्रम के अन्तर्गत दो वर्षीय बी0एड0 एवं बी0टी0सी0 (डी0एल0एड0) पाठ्यक्रम में संगीत शिक्षण सम्मिलित किया गया है, जिससे भविष्य के भावी शिक्षक भारतीय सांस्कृतिक विरासत से न केवल अवगत हो सकें, वरन् आने वाली पीढ़ी को संगीत के मूल्यों से अवगत करा सकें। बदलते परिवेश में मीडिया संसाधनों के माध्यम से 'REALITY SHOWS' सा रे गा मा पा ,सुपर डांसर, इंडियन आयडल, सुपर स्टार सिंगर द्वारा उभरती हुयी प्रतिभाओं को मंच प्राप्त हो रहा है। यही नहीं भारत सरकार द्वारा शिक्षा जगत में सभी क्षेत्रों के समान

संगीत के क्षेत्र में भी उत्कृष्ट कार्य के लिए न केवल पद्म श्री, पद्म भूषण, पद्म विभूषण एवं भारत रत्न सम्मान से पं0 रविशंकर (सितार वादक), लता मंगेशकर (गायिका), उस्ताद विस्मिल्लाह खाँ (शहनाई वादक), पं0 भीमसेन जोशी (शास्त्रीय गायक) संगीतज्ञों को अलंकृत किया गया है। अनेक संगीतज्ञों जिनमें प0 रविशंकर विश्वमोहन भट्ट, जाकिर हुसैन इत्यादि द्वारा न केवल भारत में अपितु विदेशों में भी संगीत कला को शीर्ष पर स्थापित किया गया है। विशेष रूप से संगीत कार्यालय हाथरस द्वारा ''संगीत'' मासिक पत्रिका एवं गांधर्व महाविद्यालय मण्डल पुणे द्वारा 'संगीत कला बिहार' मासिक अंक का प्रकाशन किया जाता है।

भारतीय संगीत के अन्तर्गत लोक संगीत, जिसमें जन्म एवं विवाह आदि अवसरों पर गाये जाने वाले गीत, होली गीत, सावन के गीत इत्यादि द्वारा संस्कृति एवं संस्कारों की झलक मिलती है, जिससे आजकल के अधिकांशतः किशोर एवं युवा विमुख होते जा रहे हैं। भारतीय पारंपरिक लोक संगीत के साथ ढोलक की थाप के मध्य हर्षोल्लास का वातावरण मानो, आज पाश्चात्य संगीत के प्रभाव से धूमिल होता जा रहा है। कुछ सार्वजनिक स्थानों पर कथा, भागवत, सुंदर काण्ड पाठ इत्यादि द्वारा जन–साधारण के मनोरंजनार्थ मीडिया (फिल्मी) गीतों की धुनों पर गीतों का प्रचलन बढ़ रहा है।

मानसिक तनाव, अनिद्रा एवं एकाग्रता, वर्तमान समय की बढ़ती समस्याओं में शास्त्रीय संगीत के अन्तर्गत विशेष रूप से ' कल्याण थाट' से उत्पन्न तीव्र मध्यम स्वर प्रधान राग सहायक होते हैं, क्योंकि इन मधुर स्वरों के संयोजन का श्रवण करने से मानव के शरीर में स्वतः ही कुछ ऐसे रसायन उत्पन्न हो जाते हैं, जो मनुष्य के मन–मस्तिष्क पर सकारात्मक प्रभाव डालते हैं। मानसिक तनाव एवं अनिद्रा से ग्रस्त आगरा स्थित 'काली बाडी मन्दिर' के निकट 65 वर्षीय महिला पर किये गये प्रयोग द्वारा राग यमन, भोपाली, तोड़ी इत्यादि रागों का अनुकूल प्रभाव परिलक्षित हुआ और उनके कार्य व्यवहार में निरन्तर सकारात्मक परिवर्तन देखा गया। मानसिक स्थिति पर सांगीतिक प्रभाव तभी सम्भव है, जब व्यक्ति विशेष शास्त्रीय संगीत, गाने, सुनने व जानने की क्षमता तथा रुचि रखता हो।

मेरे स्वयं के अवलोकन के अनुसार– प्रायः जिन घरों में प्रातः एवं सायं नियमित रूप से परम्परागत भजनों का श्रवण किया जाता है उन सदस्यों को अधिकांशतः उक्त समस्याओं से कम जूझना पड़ता है। इस प्रकार संगीत की यात्रा आदि से अनन्त तक अनवरत है। केवल साधारण जन–मानस के विचारों में परिवर्तन की आवश्यकता है कि वे अपनी सोच संकुचित न रखकर सांस्कृतिक विरासत को संजोएँ और संगीत की एकाग्र साधना एवं मूल्यों को आत्मसात् करें, जिससे संगीत कला मर्मज्ञों की प्रतिष्ठा को ठेस न पहुँचे।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि भारतीय संगीत का प्रारम्भ सृष्टि के प्रारम्भ से ही हुआ और अति प्राचीनकाल से लेकर वर्तमान तक अविरल धारा के रूप में शिक्षा के साथ–साथ मनोरंजन का साधन बना। संगीत के विविध रूपों–शास्त्रीय, सुगम, लोक एवं फिल्म संगीत द्वारा न केवल यह सम्मान और धनोपार्जन का साधन बना वरन् मानसिक सन्तुलन बनाये रखने में सशक्त माध्यम के रूप में उजागर हुआ। भले ही पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से भारतीय संगीत के मूल्यों में गिरावट आ रही है किन्तु फिर भी संसार का प्रत्येक प्राणी किसी न किसी रूप में संगीत का रसास्वादन कर रहा है।

1., 2. डॉ. महारानी शर्मा ' संगीत मणि'–भाग 1, श्री भुवनेश्वरी प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ0सं0–03
3. डॉ. अरुण कुमार सेन 'भारतीय तालों का शास्त्रीय विवेचन',मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, पृ0सं0 –13
4. डॉ. अर्चना शर्मा, ' संगीत' अरिहन्त प्रकाशन, मेरठ, पृ0सं0–22
5. श्री भगवत शरण शर्मा 'हिन्दुस्तानी संगीत शास्त्र'–भाग 3, संगीत मन्दिर खुर्जा, पृ0सं0–121
6., 7. डॉ. महारानी शर्मा 'संगीत मणि'–भाग 1, श्री भुवनेश्वरी प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ0सं0–14
8. डॉ. अरुण कुमार सेन 'भारतीय तालों का शास्त्रीय विवेचन',मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, पृ0सं0 –18
9. श्री भगवत शरण शर्मा 'हिन्दुस्तानी संगीत शास्त्र'–भाग 3, संगीत मन्दिर खुर्जा, पृ0सं0–139

GYAN BHAV : JOURNAL OF TEACHER EDUCATION **ISSN 2319-8419**
VOL. - 08 FEBRUARY, 2019

उच्च शिक्षा के प्राध्यापक एवं प्राध्यापिकाओं के समायोजन स्तर का तुलनात्मक अध्ययन

* डॉ. (श्रीमती) बीना कुमारी
** डॉ. पुष्पेन्द्र कुमार सारस्वत

व्यक्ति का जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में समायोजित होना अति आवश्यक होता है प्रस्तुत अध्ययन में उच्च शिक्षा के विभिन्न संकायों के प्राध्यापकों व प्राध्यापिकाओं के समायोजन का अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का उपयोग हुआ है। उपकरण के रूप में अध्ययन में डॉ. एस.के.मंगल द्वारा निर्मित 'मंगल टीचर एडजस्टमेन्ट इन्वैन्टरी' का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में ऑकड़ों के विश्लेषण के लिए 'टी–परीक्षण' का प्रयोग किया है। प्रस्तुत अध्ययन में निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि 'समायोजन के सभी क्षेत्रों में प्राध्यापक व प्राध्यापिकाओं के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

प्रस्तावना

हमारा जीवन दिन–प्रतिदिन चुनौतियों व संघर्षों से भरा हुआ है। मनुष्य अपने अस्तित्त्व को बनाए रखने के लिए अपने वातावरण व परिस्थितियों के साथ समायोजन करता है। मनोविज्ञान में परस्पर विरोधी आवश्यकताओं को संतुलित करने की व्यवहार सम्बन्धी प्रक्रिया को समायोजन कहते हैं। जो व्यक्ति जितने अच्छे ढंग से समायोजित हो जाता है, उसका जीवन पथ उतना ही सुगम होता जाता है। हमारे समाज में जहाँ अध्यापक को राष्ट्र निर्माता कहा जाता है, समाज की रीढ़ कहा जाता है, वहाँ पर यह अति आवश्यक है कि अध्यापक समायोजित हों, क्योंकि यदि अध्यापक का व्यवहार समायोजित नहीं होगा, तो वह अपने शिक्षण को प्रभावी नहीं बना सकेगा, जिसका सीधा प्रभाव उसकी शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया पर पड़ेगा व समाज भी प्रभावित होगा।

एल.एस. शेफर के अनुसार ''समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा कोई जीवधारी अपनी आवश्यकताओं तथा इन आवश्यकताओं की संतुष्टि से सम्बन्धित परिस्थितियों में सन्तुलन बनाए रखता है।''[1]

डी.जी. रैनास के अनुसार ''अच्छे अध्यापक वे हैं जो बुद्धिमान कौशल से परिपूर्ण, कर्तव्यनिष्ठ, समझदार हों व रचनात्मक समाज के निर्माण के लिए उनकी आवश्यकता है।''[2]

उद्देश्य

उच्च शिक्षा के प्राध्यापक व प्राध्यापिकाओं का समायोजन स्तर ज्ञात करना ।

परिकल्पनाएँ

1. उच्च शिक्षा के प्राध्यापक व प्राध्यापिकाओं में 'संस्थान के शैक्षिक व सामान्य वातावरण के प्रति समायोजन'(Adjustment with Academic and General Environment of Institution) क्षेत्र में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

2. उच्च शिक्षा के प्राध्यापक व प्राध्यापिकाओं में 'सामाजिक मनोशारीरिक समायोजन' (Socio-psycho-physical adjustment) क्षेत्र में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

* एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षक शिक्षा विभाग, धर्म समाज महाविद्यालय, अलीगढ़ (उ0प्र0), मो0–09410059060
** एम0फिल0, नेट, पी–एच.डी. (शिक्षाशास्त्र) डॉ. बी0आर0 आम्बेडकर विश्वविद्यालय (उ0प्र0)

3. उच्च शिक्षा के प्राध्यापक व प्राध्यापिकाओं में 'पेशेवर रिश्तों में समायोजन' (Professional relationship Adjustment) क्षेत्र में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

4. उच्च शिक्षा के प्राध्यापक व प्राध्यापिकाओं में 'व्यक्तिगत जीवन समायोजन' (Personal life Adjustment) क्षेत्र में सार्थक अन्तर नहीं है।

5. उच्च शिक्षा के प्राध्यापक व प्राध्यापिकाओं में ' वित्तीय समायोजन व व्यवसाय सन्तुष्टि' (Financial Adjustment and job satisfaction) क्षेत्र में सार्थक अन्तर नहीं है।

परिसीमाएँ

1. यह अध्ययन उच्च शिक्षा के प्राध्यापक व प्राध्यापिकाओं के समायोजन तक सीमित है।
2. यह अध्ययन अलीगढ़ जिले के स्ववित्त पोषित महाविद्यालयों के प्राध्यापकों पर किया गया है।
3. प्रस्तुत अध्ययन परीक्षण में दिए हुए 5 समायोजन क्षेत्रों तक ही सीमित है।

अनुसंधान का प्रकार व विधि

यह अध्ययन विश्लेषणात्मक प्रकार का है व अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया है।

(अ) समग्र व न्यादर्श :– अध्ययन के लिए अलीगढ़ शहर के स्ववित्त पोषित महाविद्यालयों के प्राध्यापकों को लिया गया है। न्यादर्श स्वरूप विभिन्न संकायों के 15 प्राध्यापक व 15 प्राध्यापिकाओं को चुना गया है। जिनकी उम्र 25 से 45 वर्ष के मध्य है।

(ब) उपकरण :– डॉ. एस.के. मंगल द्वारा बनाई गई मंगल टीचर एडजस्टमैन्ट इन्वेन्टरी' का प्रयोग किया गया है।

(स) आँकड़ों का विश्लेषण:– आँकड़ों के विश्लेषण के लिए मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि व टी. परीक्षण का आवश्यकतानुसार उपयोग किया गया है।

आँकड़ों का प्रस्तुतीकरण

तालिकाः–1

संस्थान के शैक्षिक व सामान्य वातावरण के प्रति समायोजन

समूह	N	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	टी.मूल्य	स्वतन्त्रता अंश (df)	सार्थकता स्तर
प्राध्यापक	15	88.8	14.64	5.79	1.19	28	.05 असार्थक
प्राध्यापिकाएँ	15	81.87	18.98				

28 df ij .05 की Table value = 2.05 } [3]
28 df ij .01 की Table value = 3.76 }

तालिका 1 से स्पष्ट है, कि उच्च शिक्षा के प्राध्यापकों का संस्थान के शैक्षिक व सामान्य वातावरण के प्रति समायोजन का मध्यमान 88.8 व मानक विचलन 14.64 है। प्राध्यापिकाओं का इस क्षेत्र में मध्यमान 81.87 व मानक विचलन 18.98 है। दोनों समूहों की मानक त्रुटि 5.79 है व टी–परीक्षण का मान 1.19 है जो कि df=28 पर टी–परीक्षण तालिका के 0.05 स्तर के मान 2.05 से कम है। अतः शून्य परिकल्पना को स्वीकार करते हुए कह रहे हैं कि संस्थान के शैक्षिक व सामान्य वातावरण के प्रति समायोजन में उच्च शिक्षा के प्राध्यापकों व प्राध्यापिकाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिकाः–2

सामाजिक मनोशारीरिक समायोजन

समूह	N	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	टी. परीक्षण	df	सार्थकता स्तर
प्राध्यापक	15	132.6	17.57	6.54	2.01	28	सार्थक अन्तर नहीं है।
प्राध्यापिकाएँ	15	119.47	17.02				

तलिका–2 से स्पष्ट होता है कि उच्च शिक्षा के प्राध्यापकों का ' सामाजिक मनोशारीरिक समायोजन' क्षेत्र का मध्यमान 132.6 व मानक विचलन 17.57 है। प्राध्यापिकाओं का इस क्षेत्र में मध्यमान 119.47 व मानक विचलन 17.02 है दोनों समूहों का मानक त्रुटि 6.54 है व टी–परीक्षण का मान 2.01 है जो कि df=28 पर टी–परीक्षण तालिका के 0.05 स्तर के मान 2.05 से कम है। अतः शून्य परिकल्पना को स्वीकार करते हैं व कह सकते हैं कि उच्च शिक्षा के प्राध्यापकों व प्राध्यापिकाओं में सामाजिक मनोशारीरिक समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिकाः–3

पेशेवर रिश्तों में समायोजन

समूह	N	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	टी. परीक्षण	df	सार्थकता स्तर
प्राध्यापक	15	83.4	11.05	3.76	1.67	28	सार्थक अन्तर नहीं है।
प्राध्यापिकाएँ	15	77.2	8.76				

तालिका–3 से यह प्रदर्शित होता है कि उच्च शिक्षा के प्राध्यापकों का 'पेशेवर रिश्तों में समायोजन' क्षेत्र में मध्यमान 83.4 व मानक विचलन 11.05 है व प्राध्यापिकाओं का इस क्षेत्र में मध्यमान 77.02 व मानक विचलन 8.76 है व दोनो समूहों की मानक त्रुटि 3.76 है एवं टी–परीक्षण का मान 1.67 है जो कि df=28 पर टी–परीक्षण तालिका के 0.05 स्तर के मान =2.05 से कम है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकार की जाती है व हम कह सकते हैं कि समायोजन के इस क्षेत्र में दोनों समूहों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिकाः–4

व्यक्तिगत जीवन समायोजन

समूह	N	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	टी. परीक्षण	df	सार्थकता स्तर
प्राध्यापक	15	119.6	14.12	5.35	1.61	28	सार्थक अन्तर नहीं है।
प्राध्यापिकाएँ	15	111.0	14.21				

तालिका–4 से स्पष्ट होता है कि उच्च शिक्षा के प्राध्यापकों का 'व्यक्तिगत जीवन समायोजन' क्षेत्र में मध्यमान 119.6 है व मानक विचलन 14.12 है। प्राध्यापिकाओं का इस क्षेत्र में मध्यमान 111 व मानक विचलन 14.21 है। दोनों समूहों की मानक त्रुटि 5.35 व टी–परीक्षण का मान 1.61 है जो कि df=28 पर टी–परीक्षण तालिका के 0.05 स्तर के मान = 2.05 से कम है। अतः शून्य परिकल्पना को स्वीकार करते हुए, हम कह रहे हैं कि 'व्यक्तिगत जीवन समायोजन' क्षेत्र में प्राध्यापकों व प्राध्यापिकाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिकाः–5

वित्तीय समायोजन व व्यावसायिक सन्तुष्टि

समूह	N	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	टी. परीक्षण	df	सार्थकता स्तर
प्राध्यापक	15	55.8	9.72	4.04	.15	28	सार्थक अन्तर नहीं है।
प्राध्यापिकाएँ	15	55.2	11.61				

तालिका–5 को देखने से स्पष्ट होता है कि उच्च शिक्षा के प्राध्यापकों का 'वित्तीय समायोजन व व्यावसायिक सन्तुष्टि' का मध्यमान 55.8 व मानक विचलन 9.72 है। प्राध्यापिकाओं का इस क्षेत्र में मध्यमान 55.2 व मानक विचलन 11.61 है। दोनों समूहों की मानक त्रुटि 4.04 है व टी–परीक्षण का मान .15 है जो कि df=28 पर टी–परीक्षण तालिका के 0.05 स्तर के मान =2.05 से काफी कम है। अतः शून्य परिकल्पना को स्वीकार करते हुए, कहा जा सकता है कि 'वित्तीय समायोजन व व्यावसायिक सन्तुष्टि' में उच्च शिक्षा के प्राध्यापकों व प्राध्यापिकाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

विवेचना

उच्च शिक्षा के प्राध्यापकों व प्राध्यापिकाओं के समायोजन का मापन निम्न क्षेत्रों में किया गया।

1. संस्थान के शैक्षिक व सामान्य वातावरण के प्रति समायोजन (Adjustment with academic and General environment of the institution)
2. सामाजिक मनोशारीरिक समायोजन (Socio-psycho physical Adjustment)
3. पेशेवर रिश्तों में समायोजन (Professional Relationship adjustment)
4. व्यक्तिगत जीवन समायोजन (Personal life adjustment)
5. वित्तीय समायोजन व व्यवसाय सन्तुष्टि (Financial adjustment and job satisfaction)

जिसमें से प्रथम क्षेत्र में शून्य परिकल्पना स्वीकार की गई, अर्थात् इस क्षेत्र में प्राध्यापकों व प्राध्यापिकाओं के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं आया, जिसका कारण हो सकता है कि उच्च शिक्षा में शिक्षण कार्य कर रहे प्राध्यापक–प्राध्यापिकाएँ अपने संस्थान के शैक्षिक व सामान्य वातावरण, जिसमें संस्थान का अनुशासन, पाठ्यक्रम, संस्था के नियम, शिक्षण–विधि, कार्यभार, परीक्षा पद्वति आदि से स्वयं को समायोजित कर लेते हैं।

समायोजन मापन के सामाजिक–मनोशारीरिक समायोजन में भी प्राध्यापकों व प्राध्यापिकाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। इसका कारण यह हो सकता है कि इस स्तर तक आते–आते उनमें सामाजिक गुण, नेतृत्वक्षमता, सेमीनार, व्याख्यानों में सहभागिता आदि विकसित हो जाती है। उन्हें अपनी शारीरिक क्षमताओं व अक्षमताओं का भी भली–भाँति ज्ञान होता है, वे अपने मनोभावों को दृढ़ रूप में व्यक्त करते हैं व मनोवैज्ञानिक रूप से दृढ़ होते हैं।

समायोजन के Professional relationship एवं personal life adjustment में भी शून्य परिकल्पना स्वीकार की गई, जिससे पता लगता है कि प्राध्यापकों व प्राध्यापिकाओं के बीच कोई अन्तर नहीं है। इसका कारण उच्च स्तर पर शिक्षण कर रहे व्यक्ति अपनी Professional life व Personal life में तालमेल करना जानते हैं। वे अपने पेशे से जुड़ी जिम्मेदारियों को बखूबी निभाते हैं एवं अपने व्यक्तिगत जीवन से सन्तुष्ट हैं चाहे उनका परिवार संयुक्त हो या एकल। घर में सभी सदस्यों का स्वास्थ्य, जीवन जीने का तरीका, घर का वातावरण सकारात्मक होना, वैवाहिक जीवन का सन्तुलित होना आदि इसके कारण हो सकते हैं।

उच्च शिक्षा के प्राध्यापकों व प्राध्यापिकाओं में 'वित्तीय समायोजन व व्यवसाय सन्तुष्टि (Financial adjustment and job satisfaction) में कोई सार्थक अन्तर नहीं आया है जिसका कारण व्यक्ति का स्वयं की इच्छा व योग्यतानुसार व्यवसाय में आना है साथ ही साथ व्यवसाय के अन्य विकल्प खुले होना भी है। व्यक्ति की जिस प्रकार की आर्थिक स्थिति होती है वे वैसे ही अपने आर्थिक दायित्वों की पूर्ति करते हैं व सन्तुष्ट हो जाते हैं अर्थात् समायोजित हो जाते है।

निष्कर्ष

प्रदत्तों के विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि प्रस्तुत अध्ययन में समायोजन के 5 क्षेत्रों (संस्थान के शैक्षिक व सामान्य वातावरण के प्रति समायोजन, 'सामाजिक मनोशारीरिक समायोजन, पेशेवर रिश्तों में समायोजन, व्यक्तिगत जीवन समायोजन, वित्तीय समायोजन व व्यवसाय सन्तुष्टि) पर उच्च शिक्षा के प्राध्यापकों व प्राध्यापिकाओं का अध्ययन किया गया, जिसमें पाया गया कि उच्च शिक्षा में शिक्षण कार्य कर रहे प्राध्यापक व प्राध्यापिकाएँ शिक्षण संस्थान के अनुशासन, पाठ्यक्रम संस्था के नियम, शिक्षण विधि, कार्यभार तथा परीक्षा पद्वति को अच्छी तरह समझ लेते हैं साथ ही उनमें सामाजिक गुणों , नेतृत्व क्षमता, शारीरिक रूप से अपनी क्षमताओं योग्यताओं एवं अपने व दूसरों के मनोभावों को समझने के गुण भी आ जाते हैं। व्यावसायिक व व्यक्तिगत जीवन में भी इनका समायोजन अच्छी तरह हो जाता है, चाहे फिर वे संयुक्त परिवार के सदस्य हों या एकल परिवार के। उनका जीवन जीने का तरीका तथा घर का वातावरण उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है व समायोजन में मदद करता है। वैवाहिक जीवन में सन्तुलन बनाने के साथ–साथ उनका आर्थिक दृष्टि से भी समायोजन अच्छा है। अतः हमारे द्वारा बनाई गई सभी शून्य परिकल्पनाएँ स्वीकृत की गयीं है। समायोजन के किसी भी क्षेत्र में प्राध्यापक व प्राध्यापिकाओं में कोई भी सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

---

1. डॉ. एस.के. मंगल (शिक्षा मनोविज्ञान)
2. डॉ. सुरेश भटनागर (शिक्षा मनोविज्ञान), आर.लाल बुक डिपो, मेरठ, पेज नं0– 382
3. डॉ. एस.पी. गुप्ता– आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, शाखा पुस्तक भवन इलाहाबाद, परिशिष्ट (3) पेज नं0–573

GYAN BHAV : JOURNAL OF TEACHER EDUCATION **ISSN 2319-8419**
VOL. - 08 FEBRUARY, 2019

A Study of the Effect of School Environment on Educational Aspiration of the Students at Secondary Level

* **Ms. Bhawna Saraswat**
** **Dr. Pooja Gupta**

Abstract

Present study is an attempt to find out the effect of school environment on educational aspiration 450 students of intermediate schools affiliated to U. P. Board constituted the sample of the study of secondary school students selected trough random sampling technique. Students were divided into three groups like high, average and low on the basis of perceived school environment. F ratio and t test were applied for treatment of the data. On the basis of the finding, it may be concluded that educational aspiration of the students are slightly affected by the school environment.

INTRODUCTION

Human beings are always immersed in a social environment, which not only changes the very structure of an individual or just compels him to recognize fact but also provides him with a readymade system of sign. It imposes a series of obligations on him. Two environments home and school share on influential space in child's life and there exists a unique juxtaposition between the two (Tucker & Bernstein, 1979). According to Sagar and Kaplan (1972), by its very nature, the family is the social biological unit that exerts the greatest influence on the development and perpetuation of the individual's behaviour. Next to family, the school is the most important experience, in the process of child development. When the child enters the school arena, he or she is presented with new opportunities in terms of socialization and cognitive development. These opportunities are provided in different measures in different school and may have a direct impact on the cognitive and affective behaviours of students. The nature of this impact can be understood if we devote our research energies to find out the environmental variables that are most effective in promoting optimum development of each child's potentialities.

SCHOOL ENVIRONMENT VARIABLES

- **Creative stimulation :-** It refers to "Teacher's activities to provide conditions and opportunities to stimulate great thinking".
- **Cognitive and encouragement : -** It implies "Teacher's behaviour to stimulate cognitive development of the students by encouraging his actions or behaviours".
- **Permissiveness : -** It indicates, "A school climate in which students are provided

* M.A (Psychology & Hindi), M.Ed. , M.Phil. NET (Education), Research Scholar, Department of Education, Mewar University, Chittorgarh (Rajasthan) Mob. 8410873600,8923814400
** Supervisor, Associate Professor, Department of Education, Mewar University, Chittorgarh (Rajasthan) Mob- 7983410789

opportunities to expressed their views freely and act according to their desires with no interruption from teachers".

- **Acceptance :-** It implies "A measure of teachers unconditional love, recognizing that students have the right to express feeling, to uniqueness, and to be autonomous individual's. Teacher accept the feelings of students in a non- threatening manner".
- **Rejection :-** It refers to "A school climate in which teachers do not accord recognition to students right to deviate, act freely and be autonomous persons".
- **Control :-** It indicates "Autocratic atmosphere of the school in which several restriction are imposed on students to discipline them.[1 & 2]

EDUCATIONAL ASPIRATION

'Level of Aspiration' is a psychological construct which reflects a cognitive type of motivation of the individual. Frank defines it in terms of the level of future performance in a familiar task which an individual knowing his level of past performance in that task explicitly undertake to reach. James Drever explains it as a frame of reference involving self-esteem or alternatively as a standard with reference to which an individual experiences, i.e., has the feeling of success or failure. Thus, the term level of Aspiration involves the estimation of his ability (whether over, under or realistic) for his future performance on the strength of his past experience (goal discrepancy), his ability and capacity, the efforts that he can make towards attaining the goal, thus set by him. The goal setting behaviour as well as the process of attaining the goal are consequences of his past experience, whether failure-oriented or success-oriented, level of efforts made by him in that direction, and his capacity to pursue the goal. Thus four main points are logically arranged in sequence of events in a level of aspiration situation.

1) Last performance
2) Setting up the level of aspiration for the next performance
3) New performance
4) Psychological effect to the new performance.

The difference between the level of the last performance and that of the new goal is called 'Goal Discrepancy' whereas the difference between the goal level and that of the new performance is called 'Attainment Discrepancy'. The greater the discrepancy, whether goal or attainment, the lesser the chances of attaining the goal and the wider the frustration that the individual may experience. Thus, both neither the over-estimation, nor the under-estimation, whatsoever they may be, but it is the realistic estimation in terms of least goal or attainment discrepancy, which brings home the highest level of satisfaction ascertaining his reality-oriented personality and consistency between his goal setting behavior and his ability and efforts to attain the same.

Hoppe (1930), Dembo (1931, 1944), Escalona (1940), Festinger (1942), Lewin, K. (1944), Sears (1944), Parikh and Chattopadhyaya (1965), Prabharamalinga Swami and

Sharma (1970), Shah and Bhargava (1971), D. Sinha (1972) and Grewal (1975) have used different instruments to measure level of aspiration of different samples. The material used in measuring level of aspiration varies from very simple (e.g. cancelling or writing letters and digits) to very complex (e.g., using standardized scales). 3

OBJECTIVES

- To study the school environment at secondary level of Aligarh region.
- To Study the Educational Aspiration of the students at secondary level.
- To examine the effect of School Environment on Educational Aspiration of the students at secondary level.

HYPOTHESES

- There is average school environment as perceived by the students.
- There is average educational aspiration shown by the students gone through the adopted test (Educational Aspiration Scale (E.A.S.) by Dr. V.P. Sharma and Dr. A.Gupta) for the study.
- There is no significant effect of the School Environment on the Educational Aspiration of the students at secondary level.

LIMITATIONS OF THE STUDY

- The present study is delimited to the students of class X studying in the government and government aided intermediate college affiliated to U. P. Board, Allahabad.
- Study is limited to the variables taken under study.
- Study is limited to Aligarh district only.
- In this present study students have not been divided on gender basis.

RESEARCH METHODOLOGY

Descriptive survey method has been used for the study. Having the view on research methods it was found that descriptive survey method is best suitable for present study so the researcher adopted the survey method.

VARIABLES

In the present study the researcher analyzed the research variables as:

- **Independent variables :** In the present study "school environment" is considered as independent variable.
- **Dependent variable :** In the present study "educational aspiration" is considered as dependent variable.
- **Intervening variables :** In the present study, all psychological Physical and emotional characteristics of the students are considered as intervening variables. A part of these variables, socio-economic status, and culture are also considered as intervening variables.

CONTROL OF INTERVENING VARIABLES

Present study is a type of descriptive research and survey methods is used to collect the data. Direct control of variables is not possible in survey studies so researcher used randomization to control the effect of intervening variables on dependent variables.

SAMPLE (450)

In the present study sample, size is 450. To achieve the objective of the study the researcher selected the appropriate and representative sample through random sampling technique.

SAMPLING

In relation to the size of the sample first of all researcher collected the list of total senior secondary schools located in Aligarh district, from the office District Inspector of Schools. At the time of study the total No of government and government aided higher secondary school and inter colleges in Aligarh district were 93.

So the researcher made a list of total schools the researcher selected 12 schools to collect the data. The researcher used the lottery technique to select the school. The total number of all students in twelve school is 1402 . Researcher decided that minimum 30 to 35 % of total students should be included in the sample of the study. The description of the selection of sample students is given below.

Table-1.0

List of selected Govt. / Govt. Aided Selected School and Sample

S. No.	Name of School	Type	No of Total Students	Percentage	Sample Students
1.	Hindu Inter College, Aligarh	Aided	109	30	33
2.	Chirangilal Girls Inter College, Aligarh	,,	112	34	39
3.	Uttam Inter college, Jiraoli, Aligarh	,,	127	31	40
4.	Rastriya Inter College Khair, Aligarh	,,	126	30	38
5.	Nagar Palika Inter College Atrauli, Aligarh	,,	150	30	45
6.	Shivdan singh Inter College, Iglas Aligarh	,,	110	35	38
7.	Barauli Inter College, Barauli, Aligarh	,,	110	35	38
8.	Krishnanand Inter College, Jalali, Aligarh	,,	92	33	30
9.	Kishan Inter College, Budhansi, Aligarh	,,	128	30	38
10.	Raghuveer Shahy Inter College, Aligarh	,,	120	33	40
11.	Govt. Inter College, Atrauli, Aligarh	,,	118	32	38
12.	Maheshwari Inter College, Aligarh	,,	100	33	33
	Total		1402		450

N=Total Sample=450

After the selection of schools the researcher collected the data.

Tools of the Study

Following tools have been used for gathering information regarding the present study.

1. School Environment Inventory (S.E.I.) by Dr. Karuna Shankar Mishra.[4]
2. Educational Aspiration Scale (E.A.S.) by Dr. V.P. Sharma and Dr. A.Gupta[4]

Statistical Techniques:

The following statistical techniques have been used to find out the conclusion study.

1. Mean[5]
2. Standard deviation[5]
3. T-ratio[5]
4. F-Test (Value/ Analysis of variance / ANOVA)[5]

Finding of the Study :

The objective No. 01 of the study **To study the school environment at secondary level of Aligarh region.**

To find out the effect of School Environment perceived by the students The researcher calculated Mean score and Standard Deviation of the students given as under table 1.0

Table-1.1

Showing No. of Students, Mean and Standard Deviation of School Environment

Total No. of Students	Mean	Standard Deviation
450	27.04	3.21

To study the scores of students obtained on S.E.I. it refers to high, average and low S.E.I.

Table-1.2

According to the Manual of S. E. I.

S. No.	Categories of the students	Score obtained
1.	High perceived school environment	34 & Above
2.	Average perceived school environment	23 to 33
3.	Low perceived school environment	Below 23

The researcher calculated the mean and standard deviation of 3 groups of students categories on basis of scores obtained on S.E.I.

Table-1.3
School Environment Perceived by the Students

S. No.	Categories	Students	Mean	S.D.
1.	High	142	20.93	19.92
2.	Average	178	164.47	13.41
3.	Low	130	113.35	25.26
	Total	**450**		

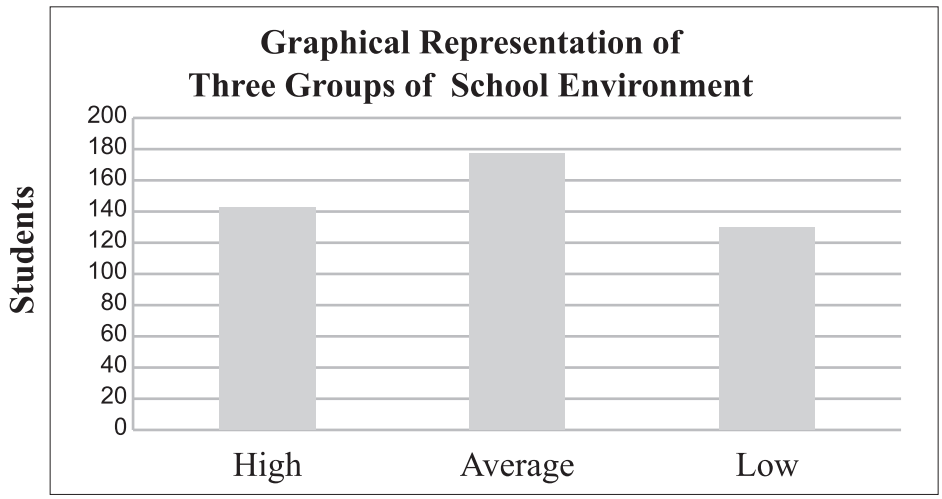

To Find Out the Educational Aspiration of the Students:

The objective No. 02 of the study **"To study the Educational Aspiration of the students at secondary level"**

In present Study, Educational Aspiration Mean the scores obtained on Educational Aspiration inventory. In present Study Educational Aspiration considered as the dependent variable. The Mean and Standard Deviation of students on Educational Aspiration scale are as follows:

Table-1.4
Showing no. of Students Mean and Standard Deviation on Educational Aspiration

N	M	S.D.
450	26.47	4.58

On the basis of Mean scores obtained by the students on Educational Aspiration inventory that the distribution of scores is normal and mostly students its secured Average marks.

After the investigator categorized the scores on the basis of High, Average and Low School Environment the scores are given below:-

Table-1.5

Showing Educational Aspiration perceived by the students

School Environment	N	Mean	S.D.
Educational Aspiration of students **HIGH** perceived School Environment	142	34.35	5.14
Educational Aspiration of students **AVERAGE** perceived School Environment	178	22.72	3.78
Educational Aspiration of students **LOW** perceived School Environment	130	22.35	4.83

N=450

To Find Out the Effect of School Environment on Education Aspiration:

Objective No. 03 of the study is "To examine the effect of School Environment on Education Aspiration of the students at secondary level."

To find out this effect, researcher formulated hypothesis 3. To test this hypothesis, researcher calculated analysis of variance (F-Test) to find out the significant difference. Amount high, average and low school environment in relation to marks obtained on study educational aspiration inventory. The mean scores of educational aspiration were 34.33, 22.72, 22.35 found and standard deviation were 5.14, 3.78, 4.83 Researcher calculated the 'F' value of study habits in relation school environment contains. The value of mean, S.D. and F-value present in the following table

Table 1.6

F-value of Educational Aspiration

School Environment and Study Habit

S. No.	Categories	Mean	S.D.	Level of Significance	F-ratio	Result
1.	Educational Aspiration of Students (High Perceived School Environment)	34.335	5.14	0.05 Value 4.26 0.01 Value 8.02	3.86	H_o= rejected H_1=accepted
2.	Educational Aspiration of Students (Average Perceived School Environment)	22.72	3.78			
3.	Educational Aspiration of Students (Low Perceived School Environment)	22.35	4.83			

N=450

On the basis of Mean and Standard Deviation, The researcher calculated 'F' value which was found 3.86 the reference value for 0.01 and 0.05 are 8.02, 4.26. The calculated value of 'F' is lower than the reference value. So it can be state that there is no significant

difference found in among the scores of Educational Aspiration on School Environment.

The aim of research process is to validate fact and make it variable. To make sure than the finding of the present Study are valid and replicable. The researcher calculated 't' value of concern variable. The researcher divided depended variables in to three categories e.g. High perceived School Environment to average perceived School Environment, High perceived School Environment to low perceived School Environment, average perceived School Environment to low perceived School Environment. The description of this calculation is given below:-

Table 1.7
't' Calculation of Educational Aspiration

S. No.	Groups	N	Mean	σ.D.	t-Value	Level of Significance
1.	Educational Aspiration of students **HIGH** perceived School Environment	142	24.35	0.51	3.15	0.01 level significant
	Educational Aspiration of students **AVERAGE** perceived School Environment	178	22.72			
2.	Educational Aspiration of students **HIGH** perceived School Environment	142.	24.35	0.60	2.64	0.01 level significant
	Educational Aspiration of students **LOW** perceived School Environment	130	22.75			
3.	Educational Aspiration of students **AVERAGE** perceived School Environment	178	22.72	0.51	0.058	0.05 level non-significant
	Educational Aspiration of students **LOW** perceived School Environment	130	22.75			

To calculate t-value the researcher divided each dependent variable into three categories and six groups on the basis of perceived School Environment after that the researcher calculated Mean Standard error and t value. The 't' value of three groups (mentioned above) are 3.15, 2.64 and 0.058 expressed that the two groups different significantly (higher then the 2.56 at 0.01 level of significance) to each other in relation to the scores of students on Educational Aspiration inventory and one group Educational Aspiration of students (average perceived School Environment) and Educational Aspiration of students (low perceived School Environment) are not significantly different (lower then the 1.98 at 0.05 level of significance) earlier. The researcher calculated F value of three

groups of Educational Aspiration on the basis of School Environment. The F value was found 4.3. It was indicated that three groups were not different to each other at last it can be states that findings of 't' test and 'F' test are partially similar.

Findings of the Study

On the basis of objective and hypothesis, researcher prepared the plan and design for the study and collected the data from the population and after applying the statistical methods on data, researcher find out the following facts about the question raised in the objectives:

1. The first objective was to study the environment of the schools located in the Aligarh district. It was found on the basis of statistical analysis that the students of different schools of Aligarh district perceived different type of school environment. Even the students of a same school perceived different school environment. So it can be stated that school environment is a matter of individual differences.
2. The distribution of scores on S.E.I. were distributed normally. So it can be stated that independent variable of the study follows normal distributions.
3. The students studying at secondary level in Aligarh district perceived the school environment differently. So the scores of students represent normal distribution. Most of the students perceived school environment average and some students perceived high and low school environment. So the school environment was divided in 'High', Average, 'Low' categories by the researcher.
4. The objective 02 of the Study was related to find out the Educational Aspiration of the students. It was found after the statistical analysis of the data. The Mean score was found 26.47 and Standard Deviation was 4.58. It can be stated on the basis of the scores obtained on Educational Aspiration scale that the students have average level of educational Aspiration.
5. The third objective of the study was related to find out the effect of school environment on Educational Aspiration. To examine the effect researcher calculated ANOVA on the scores obtained by the students on the test of Educational Aspiration. The F-value of three categories score of Educational Aspiration was not found different significantly. Therefore the researcher wants to know which groups (High-Average, High-Low, and Average-Low) significantly different. So the researcher calculated t-ratio. The t-value of three categories means of Educational Aspiration was found the two groups(High-Average, High-Low), different significantly to each other in relation to the scores of students on Educational Aspiration inventory and one group(Average-Low) Educational

Aspiration of students are not significantly different.

Discussion of the study

The present study was an attempt to find out the effect of school environment on educational aspiration. For the same, the researcher formulates some hypotheses and collected the data from the population with the help of standardized test of concerned variables. There is a vast calculation of data and how researcher made the findings discussed.

The discussion related to findings and conclusion given as under:-

- School Environment is the independent variable of the present Study. The students of secondary level of Aligarh region perceive the School Environment differently. The scores of School Environment distributed symmetrically in the population. Most of the students perceived School Environment average and other students perceived High as well as low Environment. The School of this region selected randomly so it can be hypotheses that all types of School included in the population. So it is a logical fact that a normal distributed population represented by a random sample. So the findings and conclusion of the present Study are according to the normal distribution.
- Education Aspiration is one of the important psychological phenomena, it reflect a level of Aspiration in Educational field. It was considered as a dependent variable in present Study. On the basis of findings of the Study, The researcher made a conclusion about Educational Aspiration that most of students scored average on Educational Aspiration but some student scored low and high marks in exceptional case. So it can be stated that the score on educational Aspiration inventory by the student represent the whole population.

Educational Implications of the Findings

Research is a objective, empirical and control process which consist some aims. These aims can be divided into three categories theoretical, practical and action. Educational research is a form of applied research and most related to some problems and aims. The present study also tends to some practical ends. It was an attempt to find out the effect of school environment on educational aspiration.

Conclusion

The conclusion of the study stated that school environment slightly affect educational aspiration. School is the most important agency which contributes tremendously in the development of one's personality, it shapes society. School is a specific lace to train the people for development. School environment play an important role in the development of

personality. The researcher selects educational aspiration as the independent variable. This is a major variable which affects the carrier growth and academic performance of the individual. So in total we can say that researcher include most important variable to study.

It was found that school environment have slightly impact on educational aspiration. The most important use of the conclusion is that school environment is the important factor which affects the life of the individual and the educational aspiration .The school administration should try to study the environment and make it helpful for the students.

One another important implication of the present study is related to the average scores of the dependent variable. In this study one dependent variable was study educational aspiration. The students of Aligarh district scored average or below average marks. It is a alarming indication for educationist and planners so we should try to improve the educational aspiration of the students. Otherwise it will be very dangerous for our society and nation.

References

1. Mishra,Shankar, Karuna (1983). Manual for School Environment Inventory, Ankur Psychological Agency, Lucknow
2. (PDF)09 Chapter 3 Pdf Shodhganga Shodhganga. Inflibnet.ac.in>bitstream.
3. Sharma, V.P. and Gupta, Anuradha(1971). Manual for Educational Aspiration Scale, National Psychological Corporation, Agra.
4. Catalogue (2012). National Psychological Corporation Bhargava Bhawan, Kacheri Ghat, Agra – 282004 (India) website: www.npcindia.com Page 25,60
5. Sharma, R. A. (2007). Essentials of scientific Behavioral Research, R. Lal Book Dept. Meerut. Page 72,117,309,345

GYAN BHAV : JOURNAL OF TEACHER EDUCATION **ISSN 2319-8419**
VOL. - 08 FEBRUARY, 2019

अनुदानित तथा स्ववित्त पोषित संस्थानों के बी0एड0 के छात्रों के पर्यावरणीय ज्ञान एवं अभिवृत्ति का अध्ययन

* **मनोज कुमार शर्मा**
** **डॉ0 राकेश कुमार शर्मा**
*** **डॉ0 अंशु शर्मा**

चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ से सम्बद्व अनुदानित संस्थान तथा स्ववित्त पोषित संस्थानों से क्रमशः 250–250 बी.एड. के छात्र अध्ययन में लिए गये। अनुदानित तथा स्ववित्त पोषित संस्थानों के बी. एड. के छात्रों के मध्य पर्यावरणीय ज्ञान में सार्थक अन्तर है। अनुदानित संस्थानों के छात्रों के पर्यावरणीय ज्ञान का स्तर स्ववित्त पोषित संस्थानों के छात्रों के पर्यावरणीय ज्ञान के स्तर से अपेक्षाकृत अच्छा है। अनुदानित तथा स्ववित्त पोषित संस्थानों के बी.एड. के छात्रों की पर्यावरणीय अभिवृत्ति के मध्य भी सार्थक अन्तर है। अनुदानित संस्थानों में छात्रों का पर्यावरणीय अभिवृत्ति स्तर स्ववित्त पोषित संस्थानों के छात्रों की पर्यावरणीय अभिवृत्ति के स्तर से अपेक्षाकृत अच्छा है।

प्रस्तावना

हमारे चारों ओर की भूमि, हवा, पानी, वन, वन्यजीव, समुद्र एवं प्रकृति द्वारा निर्मित प्रत्येक कण पर्यावरण का अंग है और इससे हर प्राणी का गहरा सम्बन्ध है। लेकिन हमसे भी पुराना सम्बन्ध पौधों और जानवरों का है, क्योंकि इनके बिना हमारी जिन्दगी की गाड़ी चल ही नहीं सकती। आज मानव ने स्वार्थ के लिए पर्यावरण को दूषित कर दिया है। उसके आदेशानुसार ठण्डी हवा कमरे में प्रवेश करने से पहले (हीटर के प्रयोग से) गर्म रूप धारण करे और गर्म हवा ठण्डा रूप धारण कर कमरे में प्रवेश करे। उसने नदियों की धाराओं की दिशा बदल दी, शीतल पानी के संनिघर्षण से बिजली पैदा कर दी, हवाओं के रुख को बदल दिया, पेड़ और वनस्पति को काटकर अपने उपभोग की सामग्री बना ली, जिससे वातावरण दूषित हो गया।

पर्यावरण–वे घटक जो हमारे चारों ओर उपस्थित हैं, उन सभी को संयुक्त रूप से पर्यावरण (Environment) कहा जाता है। पर्यावरण शब्द अंग्रेजी भाषा के 'Environment' शब्द का हिन्दी रूपान्तर है। Environment शब्द की उत्पत्ति 'Environ' से हुई है जिसका अर्थ चारों ओर का घेरा होता है। पर्यावरण की वैज्ञानिक परिभाषा निम्न प्रकार है–

''पर्यावरण उन सभी जैविक (Biotic) तथा अजैविक (Abiotic) कारकों का समूह है जो हमारे चारों ओर उपस्थित हैं और किसी न किसी रूप में जीवों के जीवन को प्रभावित करते हैं।''

इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका में पर्यावरण को इस प्रकार परिभाषित किया गया है–''पर्यावरण भौतिक, रासायनिक तथा जैविक कारकों का जटिल समूह है जो किसी जीवन तथा पारिस्थितिकीय समुदाय (Biotic Community) को प्रभावित करता है और इस प्रभाव से जीवों का स्वरूप तथा जीवितता निर्धारित होती है।''

प्रसिद्ध भूगोलवेत्ता **डॉ० सविन्द्र सिंह**[1] (2014) ने पर्यावरण को इस प्रकार परिभाषित किया है– ''पर्यावरण

* शोध छात्र, शिक्षा विभाग, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ
** एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ, मो. 9897434232
*** पोस्ट डॉक्टरल फैलो, आई.सी.सी.एस.आर., शिक्षा विभाग, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

भूगोल सामान्य रूप से जीवित जीवों तथा पर्यावरण के मध्य तथा मुख्य रूप से प्रौद्योगिक स्तर पर विकसित आर्थिक मानव एवं उसके प्राकृतिक संसाधनों के मध्य अन्तरसम्बन्धों के स्थानिक गुणों का अध्ययन है।'

वर्तमान युग जिसमें हम 'ईशानुकम्पा' से जीवित हैं, प्रौद्योगिकी का युग है। प्रौद्योगिकी ने मानव जीवन में बहुत सारे परिवर्तन किए हैं। व्यक्ति का जीवन स्तर उन्नत हुआ है, खेत, खान तथा पशुओं से होने वाली पैदावार बढ़ी है। जीवनोपयोगी सामग्रियों की बाढ़ आई है। इन सब उपलब्धियों के फलस्वरूप औसत आयुर्मान में निरन्तर वृद्धि होती चली आ रही है और बाल–मृत्यु दर घटती चली जा रही है। आयुर्मान में वृद्धि और बाल–मृत्यु दर में कमी होने के फलस्वरूप जनाधिक्य हुआ है जिससे व्यक्ति सरल प्राकृतिक जीवन को छोड़कर कृत्रिम जीवन जीने को बाध्य है। कृत्रिम जीवन हमारे सामने नयी समस्याएँ लेकर उपस्थित हुए हैं। ये समस्याएँ हैं– ग्रीन हाउस प्रभाव, ओजोन की पर्त में छेद, अम्लीय वर्षा, धुन्ध, कोहरा, कार्बन डाईआक्साइड तथा कार्बन मोनो–आक्साइड की प्रतिशतता में वृद्धि, वायु में सिलिका कणों की प्रतिशतता में वृद्धि तथा कीटनाशी पदार्थों के कारण वायु का विषाक्त होना, जल का संदूषण तथा जल का प्रदूषण, मृदा की विषाक्तता तथा मृदा का अपरदन तथा मृदा की उत्पादकता में कमी, भोज्य विषाक्तता, भोज्य पदार्थों का संदूषण, कुपोषण, अल्प पोषण तथा अति पोषण के रोगों का व्यापक होना, निर्वनीकरण से होने वाली विभिन्न हानियाँ तथा रेडियोधर्मी विकिरणों के दुष्प्रभाव इन समस्याओं का समाधान करना मानव जाति के अस्तित्व के लिए आवश्यक है। (सक्सेना, 2008)[2]

पर्यावरण के प्रकार–विशेषज्ञों ने पर्यावरण के कई प्रकार बताये हैं, जिसे सामान्य रूप से तीन भागों में विभाजित कर सकते हैं।(1) भौतिक पर्यावरण (2) जैविक पर्यावरण (3) मनो–सामाजिक पर्यावरण

(1) भौतिक पर्यावरण– पर्यावरण का प्रमुख भाग भौतिक पर्यावरण से मिलकर बना है, जिसके अन्तर्गत वायु, जल, खाद्य, पदार्थ, भूमि, ध्वनि, ऊष्मा, प्रकाश, नदी, पर्वत, खनिज पदार्थ विकिरण एवं अन्य पदार्थ सम्मिलित हैं, जिनसे मनुष्य का निरन्तर सम्पर्क रहता है। हमेशा इन घटकों से सम्पर्क रहने के कारण ये मानव स्वास्थ्य पर सीधा प्रभाव डालते हैं।

(2) जैविक पर्यावरण– सारभौम में जैविक पर्यावरण बहुत बड़ा भाग है, जो मानवों के इर्द–गिर्द रहता है। यहाँ तक कि एक मानव के लिए दूसरा मानव भी पर्यावरण का एक भाग है, जीव जन्तु एवं वनस्पति इस पर्यावरण के मुख्य घटक हैं। सामान्यतः मनुष्य इन जैविक अवयवों के साथ अन्तः सम्बन्ध एवं सामंजस्य बनाने का प्रयास करता है। जैविक पर्यावरण को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है– प्रथम पौधों का वातावरण तथा दूसरा जीवों एवं जानवरों का वातावरण।

(3) मनो–सामाजिक पर्यावरण– मनो–सामाजिक पर्यावरण मानव के सामाजिक सम्बन्धों से प्रकट होता है। इसके अन्तर्गत हम सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक एवं आध्यात्मिक क्षेत्रों में मानव के व्यक्तित्व के विकास का अध्ययन करते हैं। मानव एक सामाजिक प्राणी है, उसे परिवार में माता–पिता एवं भाई–बहन आदि से सम्बन्ध बनाये रखना पड़ता है, ये सभी तत्व सामाजिक वातावरण की परिधि में आते हैं। सांस्कृतिक मूल्य, प्रकृति, विश्वास, धैर्य, शिक्षा, व्यवसाय, जीवन मानव एवं राजनीतिक स्थितियाँ आदि सभी इस मानव पर्यावरण के स्रोत हैं। मनुष्य सामाजिक एवं सांस्कृतिक पर्यावरण का उत्पाद है, उसका रहन–सहन, खान–पान, पहनावा, बोल–चाल, या भाषा शैली तथा सामाजिक मान्यताएँ, मानव व्यक्तित्त्व का ढाँचा बनाती हैं। यह पर्यावरण दो प्रकार का होता है, मुक्त समाज एवं नियन्त्रित समाज। मुक्त समाज का वातावरण व्यक्तित्त्व के विकास की दृष्टि से उत्तम माना जाता है।

पर्यावरणीय ज्ञान के प्रति जन जागरूकता–पर्यावरण का जीवन से घनिष्ठ सम्बन्ध है। जीवन की सभी आवश्यकताएँ पर्यावरण से ही प्राप्त होती हैं। इसलिए पर्यावरण में होने वाला कोई भी परिवर्तन मानव जीवन के साथ–साथ समस्त जीवन जगत को प्रभावित करता है। प्राकृतिक रूप से पर्यावरण के विभिन्न घटकों के बीच एक

निश्चित सम्बन्ध होता है। जब तक यह सम्बन्ध बना रहता है, तब तक पर्यावरणीय सन्तुलन बना रहता है। लेकिन जैसे ही पर्यावरणीय घटकों के बीच सम्बन्ध प्रभावित होता है, तो इससे पर्यावरण में असन्तुलन पैदा हो जाता है। आज के सन्दर्भ में पर्यावरणीय असन्तुलन एक गम्भीर समस्या है। यह असन्तुलन समस्त जीवन जगत के विनाश का कारण बन सकता है। पर्यावरणीय असन्तुलन के कई भयावह परिणाम हमारे सामने आते जा रहे हैं। पर्यावरणीय असन्तुलन की समस्या किसी एक व्यक्ति से सम्बन्धित नहीं है और न ही किसी एक व्यक्ति से इसका हल सम्भव है। समग्र सहयोग तथा जन–जाग्रति से ही इनका हल सम्भव है। (कुमारीए 2003)[3]

पर्यावरणीय जागरूकता के उद्देश्य–पर्यावरण के सम्बन्ध में जन जागरूकता का उद्देश्य अग्र लक्ष्यों को प्राप्त करना है–

1. सौरमण्डल में केवल पृथ्वी ही एक ऐसा ग्रह है जिस पर जीवन हैं। पर्यावरणीय जागरूकता का मुख्य उद्देश्य पृथ्वी पर जीवन को नष्ट होने से बचाकर जैव–विविधता को बनाये रखना है।
2. जन जागरूकता के द्वारा पर्यावरण प्रदूषण को कम करना।
3. प्राकृतिक संसाधनों के दुरुपयोग को रोकना तथा इनका बेहतर उपयोग करना।
4. संकटग्रस्त जातियों को बचाने के लिए जन–सहयेाग बढ़ाना।
5. पर्यावरण की शुद्धता तथा प्राकृतिकता को बनाये रखना।
6. लोगों में पर्यावरण प्रेम का भाव पैदा करना।

पर्यावरण के प्रति अभिवृत्ति–अभिवृत्ति के बारे में यों तो बहुत कुछ कहा जा सकता है, परन्तु हम यहाँ पर अत्यन्त संक्षेप में अभिवृत्ति की चर्चा करेंगे। मनोवैज्ञानिकों तथा समाजशास्त्रियों के अनुसार अभिवृत्ति में निम्नलिखित लक्षण पाए जाते हैं :

1. अभिवृत्तियाँ जन्मजात नहीं होतीं, ये अर्जित की जाती हैं।
2. अभिवृत्तियों का विकास अपने समूह में विकसित होने के साथ–साथ होता है।
3. अभिवृत्तियाँ न्यूनाधिक स्थायी होती हैं, लेकिन क्योंकि अभिवृत्तियाँ सीखी जाती हैं, इसलिए उन्हें परिवर्तित भी किया जा सकता है। अर्थात् अभिवृत्तियाँ अपरिवर्तनीय नहीं होती।
4. अभिवृत्तियों में व्यक्ति, वस्तु का भाव निहित होता है। अभिवृत्तियाँ व्यक्तियों, समूहों, वस्तुओं या संस्थाओं के सम्बन्ध में बनाई जाती हैं, दूसरी ओर पर्यावरण विशेष के सम्बन्ध में भी उत्पन्न हो सकती हैं।
5. किसी व्यक्ति के प्रति वैर भाव उस व्यक्ति के समूह के प्रति भी वैर भाव में परिणत हो जाता है। यही बात वस्तु और विचार आदि के बारे में लागू होती है।
6. एक बार सीखी गई अभिवृत्ति आगे सीखी जाने वाली अभिवृत्ति को भी प्रभावित करती है।
7. अभिवृत्तियाँ भाव और संवेग से सम्बन्धित हैं।
8. अभिवृत्तियाँ किसी समूह के व्यक्तियों में लगभग समान रूप से उपस्थित रहती हैं।
9. अभिवृत्तियों में तीव्रता होती है। कहीं पर सकारात्मकता अतिन्यून होगी तो कहीं पर सकारात्मकता अधिकतम होगी, अर्थात् सकारात्मकता एवं नकारात्मकता के भी स्तर होते हैं।
10. कहावतें सूत्र, उक्तियाँ लोकोक्तियाँ आदि अभिवृत्तियों के स्वीकरण में एवं उनके त्याग में प्रेरणा प्रदान करती हैं।

शोध समस्या

पर्यावरण प्रदूषित होने से मानव जाति को ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण प्राणी जगत के जीवन को खतरा उत्पन्न हो गया है, यहाँ तक कि प्राणियों के लिए उपयोगी निर्जीव चीजें भी पर्यावरण प्रदूषण से प्रभावित हो रही है। इसलिए

पर्यावरण के प्रति जागरूकता को लेकर विश्व के वैज्ञानिक, समाजशास्त्री एवं शिक्षाविद् आदि सभी चिन्तित हैं। विश्व की सभी राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाएँ इसकी गम्भीरता का अनुभव कर रहे हैं, तथा प्रदूषण के नियन्त्रण और पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रयत्नशील हैं। आज के बी०एड० के छात्र ही कल को पूर्ण रूपेण शिक्षक बनकर शिक्षण कार्य करेंगे। यदि उन्हें पर्यावरण प्रदूषण की सम्पूर्ण जानकारी है तो वे उसका उचित ज्ञान छात्रों को उचित रूप से करा सकेंगे अन्यथा आधा–अधूरा ज्ञान ही वितरित करेंगे। इसका प्रभाव छात्रों के अधिगम पर पड़ेगा। इस शोध अध्ययन में पर्यावरण प्रदूषण के प्रति बी०एड० के छात्रों के दृष्टिकोण का अध्ययन किया गया है। जिसके अन्तर्गत पर्यावरण प्रदूषण के प्रति बी०एड० के छात्रों का दृष्टिकोण क्या है एवं कितनी जानकारी वे इस विषय में रखते हैं तथा अपने पर्यावरण के प्रति वे कितने जागरूक हैं, उपर्युक्त तथ्यों को ध्यान में रखकर शोधकर्ता के मन में जिज्ञासा उत्पन्न हुई। अतः शोधकर्ता ने इस विषय पर समस्या का चयन किया एवं इस समस्या पर अनुसन्धान करने की आवश्यकता महसूस की।

शोध समस्या का अभिकथन–उपर्युक्त तथ्यों को ध्यान में रखकर शोधकर्ता के मन में जिज्ञासा उत्पन्न हुई। अतः शोधकर्ता ने इस विषय पर निम्नलिखित समस्या का चयन किया एवं इस समस्या पर अनुसन्धान करने की आवश्यकता महसूस की।

अनुदानित तथा स्ववित्त पोषित संस्थानों के बी0एड0 के छात्रों के पर्यावरणीय ज्ञान एवं अभिवृत्ति का अध्ययन

प्रयुक्त शब्दों का अर्थ–प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त होने वाले शब्दों की परिभाषा सामान्य तथा विशिष्ट भाव में प्रस्तुत की गयी है–

बी०एड० के छात्र–प्रस्तुत शोध अध्ययन में बी०एड० की कक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों को बी०एड० के छात्रों के रूप में माना गया है, जिसमें केवल छात्रों को अध्ययन हेतु चुना गया है।

पर्यावरणीय ज्ञान–पर्यावरणीय ज्ञान से अभिप्राय पर्यावरण का अध्ययन, पर्यावरण के प्रति जागरूकता व जानकारी से है। पर्यावरण का निर्माण कैसे होता है? कौन–कौन से तत्व इसमें सम्मिलित हैं? इनका संरक्षण कैसे होता है? इत्यादि का ज्ञान पर्यावरणीय ज्ञान कहलाता है।

अभिवृत्ति–अभिवृत्ति व्यक्ति के मनोभावों और विश्वासों को इंगित करती है, अभिवृत्ति बताती है कि व्यक्ति क्या महसूस करता है अथवा इससे पूर्व विश्वास क्या थे? अभिवृत्ति व्यक्ति के सम्बन्ध में किसी विशिष्ट प्रकार के व्यवहार को प्रदर्शित करने का निर्णय लेने को प्रेरित करती है।

संस्थान के प्रकार–प्रस्तुत शोध अध्ययन में संस्थान के प्रकार से अभिप्राय बी0एड0 के अनुदानित और स्ववित्त पोषित संस्थानों से है जोकि चौ0 चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ से सम्बद्ध हैं।

अनुदानित संस्थान–ऐसे संस्थान जो सरकारी सहायता प्राप्त हैं, तथा जिनका प्रबन्धन व संचालन शासन के विभागीय अधिकारियों व चयनित प्रबन्ध समिति द्वारा किया जाता है।

स्ववित्त पोषित संस्थान–ऐसे संस्थान जिनका संचालन निजी प्रबन्धतंत्र द्वारा किया जाता है एवं उनके वित्त की व्यवस्था छात्रों से प्राप्त शुल्क से की जाती है।

अध्ययन के उद्देश्य :

प्रस्तुत शोध अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्यों को निर्धारित किये गये हैं–

1. अनुदानित व स्ववित्त पोषित संस्थानों के बी0एड0 के छात्रों के पर्यावरणीय ज्ञान का तुलनात्मक अध्ययन करना।

2. अनुदानित व स्ववित्त पोषित संस्थानों के ग्रामीण क्षेत्र के बी0एड0 के छात्रों के पर्यावरणीय ज्ञान का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. अनुदानित व स्ववित्त पोषित संस्थानों के शहरी क्षेत्र के बी0एड0 के छात्रों के पर्यावरणीय ज्ञान का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. अनुदानित व स्ववित्त पोषित संस्थानों के बी0एड0 के छात्रों की पर्यावरणीय अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. अनुदानित व स्ववित्त पोषित संस्थानों के ग्रामीण क्षेत्र के बी0एड0 के छात्रों की पर्यावरणीय अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
6. अनुदानित व स्ववित्त पोषित संस्थानों के शहरी क्षेत्र के बी0एड0 के छात्रों की पर्यावरणीय अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं अर्थापन–तालिका संख्या–1 के द्वारा अनुदानित व स्ववित्त पोषित संस्थानों के बी0एड0 के छात्रों के पर्यावरणीय ज्ञान के स्तर से सम्बन्धित आँकड़ों का तुलनात्मक विवरण व विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

तालिका संख्या–1

अनुदानित व स्ववित्त पोषित संस्थानों के बी0एड0 के छात्रों के पर्यावरणीय ज्ञान का तुलनात्मक विवरण

बी0एड0 के छात्र	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान की मानक त्रुटि	कुल छात्रों की संख्या	क्रान्तिक अनुपात मान (t)	सार्थकता स्तर
अनुदानित संस्थान	48.61	14.23	0.900	250	4.349	0.01 स्तर पर सार्थक
स्ववित्त पोषित संस्थान	43.36	12.72	0.804	250		

उपर्युक्त तालिका का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि अनुदानित व स्ववित्त पोषित संस्थानों के बी0एड0 के छात्रों के पर्यावरणीय ज्ञान के मध्य टी का गणनात्मक मान 4.349 है। टी का गणनात्मक मान स्वतन्त्रांश के स्तर 498 पर टी का तालिका मान सार्थकता के स्तर 0.01 पर 2.58 से अधिक है। अतः अनुदानित संस्थानों के बी0एड0 के छात्रों के पर्यावरणीय ज्ञान एवम् स्ववित्त पोषित संस्थानों के बी0एड0 के छात्रों के पर्यावरणीय ज्ञान के मध्यमानों के मध्य सार्थक अन्तर है।

तालिका संख्या–2 के द्वारा अनुदानित व स्ववित्त पोषित संस्थानों के ग्रामीण क्षेत्र के बी0एड0 के छात्रों के पर्यावरणीय ज्ञान के स्तर से सम्बन्धित आँकड़ों का तुलनात्मक विवरण व विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

तालिका संख्या–2

अनुदानित व स्ववित्त पोषित संस्थानों के ग्रामीण क्षेत्र के बी0एड0 के छात्रों के पर्यावरणीय ज्ञान का तुलनात्मक विवरण

ग्रामीण क्षेत्र के बी0एड0 के छात्र	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान की मानक त्रुटि	कुल छात्रों की संख्या	क्रान्तिक अनुपात मान (t)	सार्थकता स्तर
अनुदानित संस्थान	44.74	10.06	0.954	110	1.504	किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं
स्ववित्त पोषित संस्थान	46.89	11.36	1.059	115		

उपर्युक्त तालिका का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि अनुदानित व स्ववित्त पोषित संस्थानों के ग्रामीण क्षेत्र के बी0एड0 के छात्रों के पर्यावरणीय ज्ञान के मध्य टी का गणनात्मक मान 1.504 है। टी का गणनात्मक मान स्वतन्त्रांश के स्तर 223 पर टी का तालिका मान सार्थकता के स्तर 0.05 पर 1.96 से कम है। अतः अनुदानित व स्ववित्त पोषित संस्थानों के ग्रामीण क्षेत्र के बी0एड0 के छात्रों के पर्यावरणीय ज्ञान के मध्य सार्थक स्तर का अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या–3 के द्वारा अनुदानित व स्ववित्त पोषित संस्थानों के शहरी क्षेत्र के बी0एड0 के छात्रों के पर्यावरणीय ज्ञान के स्तर से सम्बन्धित आंकड़ों का तुलनात्मक विवरण व विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

तालिका संख्या–3

अनुदानित व स्ववित्त पोषित संस्थानों के शहरी क्षेत्र के बी0एड0 के छात्रों के पर्यावरणीय ज्ञान का तुलनात्मक विवरण

शहरी क्षेत्र के बी0एड0 के छात्र	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान की मानक त्रुटि	कुल छात्रों की संख्या	क्रान्तिक अनुपात मान (t)	सार्थकता स्तर
अनुदानित संस्थान	47.76	12.06	1.019	140	2.711	0.01 स्तर पर सार्थक
स्ववित्त पोषित संस्थान	44.11	10.14	0.872	135		

उपर्युक्त तालिका का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि अनुदानित व स्ववित्त पोषित संस्थानों के शहरी क्षेत्र के बी0एड0 के छात्रों के पर्यावरणीय ज्ञान के मध्य टी का गणनात्मक मान 2.711 है। टी का गणनात्मक मान स्वतन्त्रांश के स्तर 273 पर टी का तालिका मान सार्थकता के स्तर 0.01 पर 2.58 से अधिक है। अतः अनुदानित व स्ववित्त पोषित संस्थानों के शहरी क्षेत्र के बी0एड0 के छात्रों के पर्यावरणीय ज्ञान के मध्य सार्थक अन्तर है।

तालिका संख्या–4 के द्वारा अनुदानित व स्ववित्त पोषित संस्थानों के बी0एड0 के छात्रों की पर्यावरणीय अभिवृत्ति के स्तर से सम्बन्धित आँकड़ों का तुलनात्मक विवरण व विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

तालिका संख्या–4

अनुदानित व स्ववित्त पोषित संस्थानों के बी0एड0 के छात्रों की पर्यावरणीय अभिवृत्ति का तुलनात्मक विवरण

बी0एड0 के छात्र	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान की मानक त्रुटि	कुल छात्रों की संख्या	क्रान्तिक अनुपात मान (t)	सार्थकता स्तर
अनुदानित संस्थान	46.36	11.87	0.750	250	3.130	0.01 स्तर पर सार्थक
स्ववित्त पोषित संस्थान	43.26	10.21	0.645	250		

उपर्युक्त तालिका का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि अनुदानित व स्ववित्त पोषित संस्थानों के बी0एड0 के छात्रों की पर्यावरणीय अभिवृत्ति के मध्य टी का गणनात्मक मान 3.130 है। टी का गणनात्मक मान स्वतन्त्रांश के स्तर 498 पर टी का तालिका मान सार्थकता के स्तर 0.01 पर 2.58 से अधिक है। अतः अनुदानित व स्ववित्त पोषित संस्थानों के बी0एड0 के छात्रों की पर्यावरणीय अभिवृत्ति के मध्य सार्थक अन्तर है।

तालिका संख्या–5

अनुदानित व स्ववित्त पोषित संस्थानों के ग्रामीण क्षेत्र के बी0एड0 के छात्रों की पर्यावरणीय अभिवृत्ति का तुलनात्मक विवरण

ग्रामीण क्षेत्र के बी0एड0 के छात्र	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान की मानक त्रुटि	कुल छात्रों की संख्या	क्रान्तिक अनुपात मान (t)	सार्थकता स्तर
अनुदानित संस्थान	46.82	12.69	1.209	110	1.071	किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं
स्ववित्त पोषित संस्थान	45.07	11.83	1.103	115		

उपर्युक्त तालिका का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि अनुदानित व स्ववित्त पोषित संस्थानों के ग्रामीण क्षेत्र के बी0एड0 के छात्रों की पर्यावरणीय अभिवृत्ति के मध्य टी का गणनात्मक मान 1.071 है। टी का गणनात्मक मान स्वतन्त्रांश के स्तर 223 पर टी का तालिका मान सार्थकता के स्तर 0.05 पर 1.96 से कम है।

अतः अनुदानित व स्ववित्त पोषित संस्थानों के ग्रामीण क्षेत्र के बी0एड0 के छात्रों की पर्यावरणीय अभिवृत्ति के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या–6 के द्वारा अनुदानित व स्ववित्त पोषित संस्थानों के शहरी क्षेत्र के बी0एड0 के छात्रों की पर्यावरणीय अभिवृत्ति के स्तर से सम्बन्धित आँकड़ों का तुलनात्मक विवरण व विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

तालिका संख्या–6

अनुदानित व स्ववित्त पोषित संस्थानों के शहरी क्षेत्र के बी0एड0 के छात्रों की पर्यावरणीय अभिवृत्ति का तुलनात्मक विवरण

शहरी क्षेत्र के बी0एड0 के छात्र	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान की मानक त्रुटि	कुल छात्रों की संख्या	क्रान्तिक अनुपात मान (t)	सार्थकता स्तर
अनुदानित संस्थान	46.96	12.46	1.053	140	2.863	0.01 स्तर पर सार्थक
स्ववित्त पोषित संस्थान	43.01	10.27	0.883	135		

उपर्युक्त तालिका का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि अनुदानित व स्ववित्त पोषित संस्थानों के शहरी क्षेत्र के बी0एड0 के छात्रों की पर्यावरणीय अभिवृत्ति के मध्य टी का गणनात्मक मान 2.863 है। टी का गणनात्मक मान स्वतन्त्रांश के स्तर 191 पर टी का तालिका मान सार्थकता के स्तर 0.01 पर 2.58 से अधिक है।

अतः अनुदानित व स्ववित्तपोषित संस्थानों के शहरी क्षेत्र के बी0एड0 के छात्रों की पर्यावरणीय अभिवृत्ति के मध्य सार्थक अन्तर प्राप्त हुआ है।

अध्ययन के परिणाम

1. अनुदानित व स्ववित्त पोषित संस्थानों के बी0एड0 के छात्रों के पर्यावरणीय ज्ञान के मध्य सार्थक अन्तर है। अनुदानित संस्थानों के बी0एड0 के छात्रों के पर्यावरणीय ज्ञान का स्तर स्ववित्त पोषित संस्थानों के बी0एड0 के छात्रों के पर्यावरणीय ज्ञान के स्तर से सापेक्षतः ज्यादा अच्छा है।
2. अनुदानित व स्ववित्त पोषित संस्थानों के ग्रामीण क्षेत्र के बी0एड0 के छात्रों के पर्यावरणीय ज्ञान के मध्य सार्थक स्तर का अन्तर नहीं है। अनुदानित संस्थानों के ग्रामीण क्षेत्र के बी0एड0 के छात्रों के पर्यावरण ज्ञान का स्तर

स्ववित्त पोषित संस्थानों के ग्रामीण क्षेत्र के बी0एड0 के छात्रों के पर्यावरणीय ज्ञान के स्तर से सापेक्षतः कम प्राप्त हुआ है।

3. अनुदानित व स्ववित्त पोषित संस्थानों के शहरी क्षेत्र के बी0एड0 के छात्रों के पर्यावरणीय ज्ञान के मध्य सार्थक अन्तर है। अनुदानित संस्थानों के शहरी क्षेत्र के बी0एड0 के छात्रों के पर्यावरणीय ज्ञान का स्तर स्ववित्त पोषित संस्थानों के शहरी क्षेत्र के बी0एड0 के छात्रों के पर्यावरणीय ज्ञान के स्तर से सापेक्षतः ज्यादा अच्छा है।
4. अनुदानित व स्ववित्त पोषित संस्थानों के बी0एड0 के छात्रों की पर्यावरणीय अभिवृत्ति के मध्य सार्थक अन्तर है। अनुदानित संस्थानों के बी0एड0 के छात्रों की पर्यावरणीय अभिवृत्ति का स्तर स्ववित्त पोषित संस्थानों के बी0एड0 के छात्रों की पर्यावरणीय अभिवृत्ति के स्तर से सापेक्षतः ज्यादा अच्छा है।
5. अनुदानित व स्ववित्त पोषित संस्थानों के ग्रामीण क्षेत्र के बी0एड0 के छात्रों की पर्यावरणीय अभिवृत्ति के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है। अनुदानित संस्थानों के ग्रामीण क्षेत्र के बी0एड0 के छात्रों की पर्यावरणीय अभिवृत्ति का स्तर स्ववित्त पोषित संस्थानों के ग्रामीण क्षेत्र के बी0एड0 के छात्रों की पर्यावरणीय अभिवृत्ति के स्तर से सापेक्षतः अधिक प्राप्त हुआ है परन्तु अन्तर का स्तर सार्थक नहीं है।
6. अनुदानित व स्ववित्त पोषित संस्थानों के शहरी क्षेत्र के बी0एड0 के छात्रों की पर्यावरणीय अभिवृत्ति के मध्य सार्थक स्तर का अन्तर प्राप्त हुआ है। अनुदानित संस्थानों के शहरी क्षेत्र के बी0एड0 के छात्रों की पर्यावरणीय अभिवृत्ति का स्तर स्ववित्त पोषित संस्थानों के शहरी क्षेत्र के बी0एड0 के छात्रों की पर्यावरणीय अभिवृत्ति के स्तर से सापेक्षतः ज्यादा अच्छा है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त विश्लेषण, व्याख्या और परिणामों के आधार पर निम्नलिखित निष्कर्ष निकाले गए हैं–

- अनुदानित संस्थानों के बी0एड0 के छात्रों के पर्यावरणीय ज्ञान तथा पर्यावरणीय अभिवृत्ति का स्तर स्ववित्त पोषित संस्थानों के बी0एड0 के छात्रों के पर्यावरणीय ज्ञान के स्तर से सापेक्षतः ज्यादा अच्छा है अर्थात् अनुदानित संस्थानों के बी0एड0 के छात्रों को पर्यावरण सम्बन्धित जानकारियाँ अधिक सुविधाजनक रूप में उपलब्ध हैं, जिससे उनका पर्यावरणीय ज्ञान तथा पर्यावरणीय अभिवृत्ति स्ववित्त पोषित संस्थानों के बी0एड0 के छात्रों से अधिक पायी गयी।
- अनुदानित व स्ववित्त पोषित संस्थानों के ग्रामीण क्षेत्र के बी0एड0 के छात्रों के पर्यावरणीय ज्ञान तथा पर्यावरणीय अभिवृत्ति के मध्य कोई भी सार्थक अन्तर नहीं है। अतः यह कहा जा सकता है कि ग्रामीण क्षेत्र के बी0एड0 के छात्रों के पर्यावरणीय ज्ञान तथा पर्यावरणीय अभिवृत्ति का विकास समान रूप से होता है।
- अनुदानित संस्थानों के शहरी क्षेत्र के बी0एड0 के छात्रों के पर्यावरणीय ज्ञान तथा पर्यावरणीय अभिवृत्ति का स्तर स्ववित्त पोषित संस्थानों के शहरी क्षेत्र के बी0एड0 के छात्रों के पर्यावरणीय ज्ञान के स्तर से सापेक्षतः ज्यादा अच्छा है। अतः यह कहा जा सकता है कि शहरी क्षेत्रों के विद्यालयों में पर्यावरणीय ज्ञान तथा पर्यावरणीय अभिवृत्ति सम्बन्धित जानकारी सुगमता से उपलब्ध है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. सविन्द्र सिंह (2014) , जैव भूगोल, प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद
2. सक्सेना, एम., (2008). लेवल ऑफ अवेयरनेस ऑफ एनवायर्नमेंटल पोलूशन अमोंग रूरल एंड अर्बन वीमेन एंड एजूकेशनल इम्प्लकेशन, एक्सपेरिमेंट्स इन एजूकेशन. वोल. XXXVI , नम. 3, 105–107
3. कुमारी. एन. (2003) सिग्निफिकेंस ऑफ एनवायर्नमेन्टल एजूकेशन इन इण्डिया एनवायर्नमेन्टल, इन इण्डिया, राधा पब्लिकेशन नई दिल्ली–2, 205–216.

"A differential Managerial Styles of Principals: A Study "

⁕ **Dr. Poonam Mishra**
⁕⁕ **Sanjeev Kumar**

Abstract

In the present research paper an attempt has been made to study the managerial style of principals in relation to their caste. The managerial style questionnaire developed by Pareek (1999) was administered on 180 Intermediate Institution and principal working there. They were selected by using random method of sampling from the population of 400 intermediate college situated at Etah and Mathura District (U.P.). The finding of the study revealed that the principals working at intermediate colleges have a discernible style of managing which is a composite of these two dimensions. Since no manager can be completely task oriented or fully people oriented, he can have a variable position somewhere on both these dimensions.

Introduction

School is one of the most important institutions in any society. It is set up by the society to shape the society with a large number of objectives which are of an immensely important nature. The function of developing the future citizen is entrusted to school. Therefore the school is the second best next to home. The school is the chief determinant of an individual personality.

Schools and colleges are unique organizations in course of the time to achieve specific goals for preparing good citizens. But the realization of goals depends upon the efficiency and effectiveness with which an institution is to be administered. Administration of an educational institution plays a nucleus role in the development of such desirable behavioural traits as knowledge attitude, skill and intellect. The integral part of child personality. Since the success of any educational organization depends upon the effective administration; if the school and college have to achieve wide range of objectives set for them by their director (institutional head) then, it is only possible when there is a good management, inspiring and effective leadership qualities of their principals. These days in an increasingly global economy and vocationalization, the role of educational institutions is increasing day by day; now an educational work force is vital to maintain and enhance competitiveness in the

⁕ M.Sc. (Botony) M.Ed., NET, Ph.D. (Education) , A.T. Basic Education Department, Aligarh, Mob. 9412818454
⁕⁕ M.A., M.Ed., NET, JRF, Principal, Vedram Tarai Inter College Badhaula, Kasganj, Mob.09897441865

educational institutions. The colleges and universities are expected its inculcate exemplary skill for employment. The teachers and principals are responsible to meet out such demands of the society and maintain the higher educational standard in their Institutions accordingly to Kothari Commission (1964-66).

"A sympathetic and imaginative system of supervision and administration can initiate and accelerate educational reform. On the other hand a rigid bureaucratic approach can stifle all experimentation and creativity and make any educational reconstruction almost impossible".

The principal who is the educational manager is the pivot point of any educational institution.

The educational manager of India must change and use style that fit into the socio-cultural and political change taking place in the country. Principals are infact facing a plethora of criticism nowadays. Neither the traditional bureaucratic style nor the democratic style of management is really working for most officials. Especially if scheduled caste and backward classes are concerned. Principals have increased enormously since India become independent. The real challenge with respect to the scheduled caste and backward classes principals in school and college come in the attempt to predict their managerial style, personal behaviour characteristics to understand them as administrators beyond the normative sense. To know not only how they are like the other counterpart non scheduled caste Principals but also in what way they differ. Hence there arises a keenness to study the scheduled caste and backward classes Principals and administrators arise in the researcher's mind, why to study? Where to study? How to study? And finally what to study about them and in what relation?

Operational Definition

Managerial style: Managerial style of a principal is very important in a college. How he deals with his colleagues, takes decision, planning, implementation and evaluation are some of the functions by which we can assess his style of management. In this study, the researchers used the grid concept of leadership. All the leadership theories have defined leadership managerial style in terms of two broad dimension: concern for task and concern for people. These concerns are not mutually exclusive; rather they are complementary with one another.

The term "Manager" points out to a person who is holding a managerial position since these person are responsible for achieving the organization goals. They are to be legitimately designated as a leader.

Objectives of study

1. To identify the managerial style pattern of the principals working in intermediate college or higher secondary schools.
2. To study the managerial style patterns of the reserved and non reserved caste principals.
3. To compare the managerial style of the principals of the reserved and non-reserved caste category principals.

Hypotheses

1. Reserved and non-reserved caste principals do not differ significantly with respect to their managerial style.
2. Castes of the principals do not have significant effect of the effectiveness of the institutions where they are working.

Method

In the study independent variable managerial style is inherent in the Principals and the effect of independent variable. Since the independent variable under study is not subject to direct manipulation and cannot be manipulated through selection only have expost facto methods of research was followed.

The normative survey research method for the present problem in order to compare differential describe and identify the different personality traits managerial style and capabilities of the two different groups of principals of Etah and Mathura.

Population

The study was concerned with the Principals of intermediate college of Etah and Mathura districts.

Sample

For sample, there are 180 intermediate institutions and their Principals selected by using random method of sampling from the population of 400 intermediate colleges situated in Etah and Mathura districts.

Tools

MSQ developed by pareek (1999) was used for managerial style of reserved and non reserved caste principals.

Procedure

The procedure used in this study was selected keeping in view the nature of the problem undertaken. The nature of the problem in caused comparative and descriptive. Therefore in the present study. The expost facto method of research was used.

Statistical Technique

For the analysis of the data both descriptive and inferential statistics were used. In descriptive statistics mean and standard deviation were used and in inferential statistics F test and t-test are used to analyze the whole data.

Result and Discussion

Comparison of managerial styles of the Principals belonging to reserved Non-Reserved castes-

Table:1

Mean, S.Ds. and t values of Avoidance not O.K. managerial styles of the principals belonging to Non. Reserved (General) and Reserved Caste N=90

Ego-States	Group Managerial Functional Style	General Caste Principal N=90 Avoidance & Not OK Style		Reserved caste principal N=90 Avoidance & Not OK Style		t values
		M	SD	M	SD	
Nurturing Parent	Rescuing style	7.35	1.90	5.82	3.50	3.65**
Regulating Parent	Prescriptive style	8.40	1.77	5.74	3.01	7.19**
Adult	Task Obsessive	3.21	1.77	6.50	3.92	7.25**
Creative Child	Bohemian	7.50	1.33	5.86	1.70	7.20**
Adoptive Child	Sulking	3.82	1.55	2.42	1.66	2.56
Reactive Child	Aggressive	7.45	1.60	4.32	1.92	11.88**

**Significant at the 0.01 level

Table:2

Means, S.Ds and t values of approach or O.K. Style of Principals belonging to General and Reserved Castes.

Ego-States	Group Managerial Functional Style	General Caste Principal N=90 Approach & OK Style		Reserved caste Principal N=90 Approach & OK Style		t values
		M	SD	M	SD	
Nurturing Parent	Supportive	11.82	2.28	8.86	2.64	8.05**
Regulating Parent	Normative	12.01	2.88	7.34	2.50	11.62**
Adult	Problem Solving	12.81	1.43	8.30	3.21	12.18**
Creative Child	Innovalive	12.63	1.54	6.98	2.41	18.74**
Adoptive Child	Resilent	4.52	1.65	3.32	1.65	4.88**
Reactive Child	Assertive	11.41	1.50	7.12	2.50	13.96**

**Significant at the 0.01 level

Managerial Style Profile of the Principals belonging to Reserved and Non-reserved castes working in Intermediate College

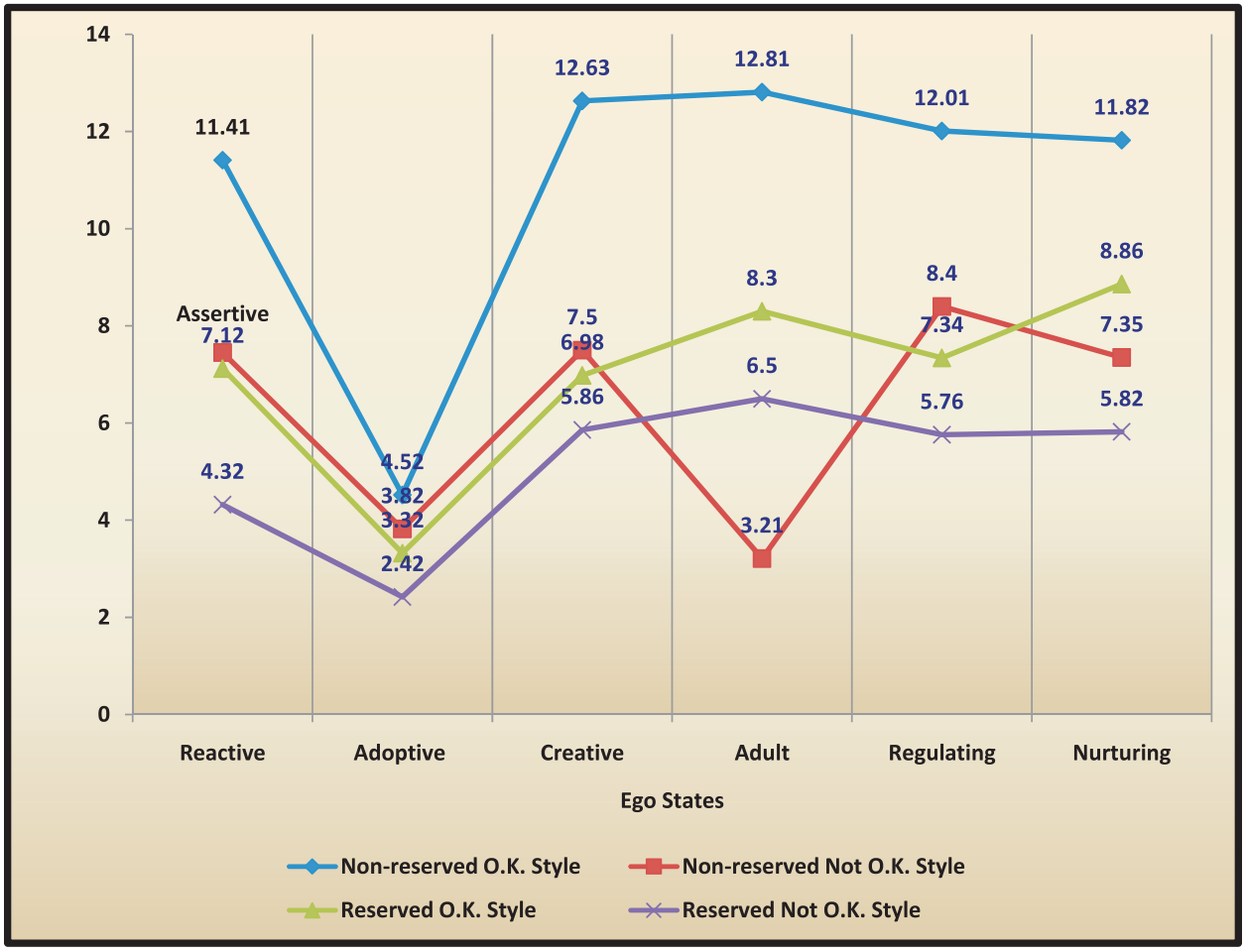

Discussion

Analyzing the table 1 and 2 clearly reveals that all the principal of both the categories reported O.K. or approach style in different ego states. Further data depicted that general caste principals are more often recognized as having 'Problem Solving Style' of administration. It is quite surprising while comparing both the group of Principals with regard to aggressive style of functioning. They contributed negatively. It may be due to Authoritarian V/s. Democratic style functioning. Results in the table are also indicating that is Avoidance or dysfunctional not O.K. style, general caste principals are quite frequent and dominant in prescriptive and rescuing style in comparison to reserved caste principals. Reserved caste principals seem very

low in resilient and assertive style of administration in comparison to non reserved caste principals.

Further the result of the table 1 and the profile 4 reflect that 'Bohemian' and 'Aggressive' style are more often used by Non-Reserved Caste principals in comparison to the Reserved Caste Principals. This indicates that non-reserved caste principals are more aggressive in their demands or expectation, they continuously struggle regarding issues or problems and maintaining law and order. They do not stay with one idea and are continuously obsessed with new idea. They overwhelm teachers with their new ideas. The researcher also observed that most of the urban area school principals were adopting innovative style of functioning with their teachers. Thus, non-reserved caste principals are found having significantly higher 'Rescuing' and 'Prescriptive' style of administration, while reserved caste principals have been found 'Task Obsessive' and 'Rescuing' in their managerial style of 'Avoidance' or not ok style. Though both the groups are found very low in 'Sulking' but general caste principals are found significantly higher then reserved caste principals in this style.

Conclusion

The finding of the study reveals that the principals working at intermediate colleges are in practice to use both type of managerial administrative style e.g. approach or O.K. and Avoidance or not O.K. functional styles, with all their ego. e.g. parent, adult and child. In combination to these, the almost all twelve types of managerial style are used by the principals working in intermediate colleges. But most of the principals, either they belong to reserved caste or non-reserved caste category are using approach or O.K. functional styles of parent or adult ego style i.e. problem solving and supportive. Very few are also in practice of avoidance or not O.K. functional style of administration. They were prescriptive task obsessive behavior and aggressive under the regulating parent, adults creative child ego state and reactive child ego state. Thus the principals' caste does not cause significant variation in the adaptation of the different managerial/administrative styles. In other words it can be said that the managerial/administrative style of the principals almost are independent from their caste.

References

Pareek (1999)
Managerial style Questionnaire (MSQ) Ref. in Pareek U. Training Instrument in HRD and OD (IInd) New Delhi, Tata MC Graw Hill Publishing Co. Ltd., 2002.

Note:- This research paper is based on unpublished thesis of Ph.D. " A DIFFERENTIAL STUDY OF MANAGERIAL STYLES OF PRINCIPALS IN RELATION TO THEIR CASTE AND ITS EFFECT ON THE TEACHER'S ALIENATION, SELF CONCEPT AND INSTITUTIONAL EFFECTIVENESS OF WORKING IN INTERMEDIATE COLLEGES" of first researcher Dr. Poonam Mishra. This thesis was submitted in Dr. B.R. Ambedkar University, Agra in year 2014.

Subscription Form for the Gyan Bhav – Journal of Teacher Education
Institutional/Individual

1. Full Postal Address (In Block Letters)
   a) Name _____
   b) Designation _____
   c) Name of University/College/Institute _____
   d) Full Mailing Address _____
   _____ Pin _____
   E-mail _____ Phone/Mobile _____
2. Subscription for Calendar Year _____
   (Annual Subscription of the Journal commences from January and ends with December)
3. Please Tick ( ) the appropriate one:

	Annual Subscription Rate (in Rs.)	
i. Paper Contributor /Author As well as co-author	1000/-	☐
ii. Institute/University/College	800/-	☐
iii. Individual	600/-	☐

Note :- 20% Discount on Subscription for 3 years and above.

4. Please make the payment by CROSSED Bank Draft in Favour of Gyan Mahavidyalya Payable at Aligarh.
   Details of Payment : Cash/Bank Draft
   Bank Draft No. _____ for Rs. _____
   Dated _____ Drawn on _____
5. Journal will be published in the month of February in every year.

(Full Signature of the applicant)

Please mail the subscription form along with the Bank Draft or Bank receipt at the following Address :

The Principal
Gyan Mahavidyalaya,
Agra Road
Aligarh (U.P.)
202002
E-mail : publicationgyan@gmail.com

You may also Transfer the Amount in our Bank Account mentioned below.

Name	–	Gyan Mahavidyalaya
Bank Name	–	Bank of Baroda
Account No.	–	21620100057221
I.F.S.C. Code	–	BARBOSASNIG (READ FIVE DIGIT ZERO)
Branch Name	–	Sasni gate, Agra Road Aligarh
City	–	Aligarh (202001)

Please sent also the subscription form by E-mail : deepgas@hotmail.com

JOURNAL

Varshney Printers & Suppliers # 9758286283, 9536197078